Volume 89 • September-2014 Price Rs. 5-00

SHREE SWAMINARAYAN

Monthly

Publish of Magazin on 11th of Every Month

H.H. Shri Acharya Maharaj performing poojan in here Swainarayan temple, Louis Ville-Kantaki (America) on the occasion of invocation of idol images.

Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

(1) Abhishek Darshan in Colonia temple on the occasion of Patotsav. (2) Grand Hindola Darshan of American currency in Byron temple. (3) The host devotees performing aarti of H.H. Shri Mota Maharaj, H.H. Shri Acharya Maharaj in Shree Swaminarayan temple, Detroit on the occasion of Patotsav and H.H. Shri Acharya Maharaj granting Darshan to Haribhaktas in a programme 'Run for awareness about Cancer'. (4) The spokesperson narrating Katha-Parayan in the pious presence of H.H. Shri Mota Maharaj in the grand Sabha of the saints organized on the occasion of Patotsav of Chicago temple and Shri Mahant Swami addressing the Sabha. (5) Mahant Swami narrating Kathamrit in Naranpura temple. (6) Mobile Application of Jetalpur temple launched by H.H. Shri Acharya Maharaj on the occasion of Parayan. (7) H.H. Shri Lalji Maharaj performing concluding aarti of Yagna of Shree Siddheshwar Mahadev organized in Kankaria temple.

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ८ ● अंक : ८९

सितम्बर-२०१४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	भगवान के पांच भेद	०६
०४.	प्रसादी के पत्रों का आचमन	०८
०५.	श्रीहरि की प्रागट्यभूमि छपैया की अलौकिक महिमा	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०७.	सत्संग बालवाटिका	१७
०८.	भक्ति सुधा	१९
०९.	सत्संग समाचार	२१

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

अपने इष्टदेव श्रीहरि अत्यन्त दयालु तथा करुणा के सागर हैं । जिसके ऊपर प्रसन्न होते हैं उसे सर्वोत्कृष्ट सुख प्रदान करते हैं । ऐसे सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान हमें मिले है । इस घोर कलियुग में भगवान थोड़ी भक्ति से भी प्रसन्न हो जाते हैं । लेकिन भगवान का दृढ आश्रय होना चाहिये । जो हमें मिले हैं वे सर्वोपरि है और अवतार के अवतारी है भगवान है । ऐसी मन में उत्तम भावना हो जायेगी तब उसे कुछ करने की आवश्यकता नहीं है । हजारो-लाखों वर्ष पूर्व ऋषि मुनि भगवान की प्राप्ति के लिये हजारो वर्ष तक तप करते रहते फिर भी भगवान प्राप्त नहीं होते थे । हम सभी की अहोभाग्य है कि ऐसा सत्संग मिला है - जिसमें अमूल्य मनुष्य की शरीर मिली है । इस लिये जितना हो सके उनता भगवान की भजन करलेनी चाहिये ।

अपने सत्संग में उत्सव चलता रहता है । अयोध्या मंदिर में शताब्दी महोत्सव, आगामी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४२ वाँ प्रागट्योत्सव कलोल में दशहरा के दिन मनाया जायेगा । श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव २४ दिसम्बर-२०१४ से २९ दिसम्बर-२०१४ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्य में तथा भावि आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा । देश विदेश के हरिभक्त ऐसे प्रसंग का अवश्य लाभ लें । महाराज उत्सवों का आयोजन इसी हेतु से करते थे कि चाहे जैसा भी जीव हो उसे अन्तकाल में उत्सव के कार्यक्रमो का स्मरण हो जाय तो उसका कल्याण हो जायेगा । हम तो उनके आश्रित है इसलिये हमारा कल्याण तो होगा ही साथ में अक्षरधाम की प्राप्ति होगी । इसलिये प्रिय भक्तों ? ऐसे उत्सवों का दर्शन अवश्य करना ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (अगस्त-२०१४)

(जुलाई ३१ से २० अगस्त तक के कार्यक्रम प्रकाशित हुये हैं)

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२७ अगस्त से १९ सितम्बर-२०१४ तक
श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन (अमेरिका) पाटोत्सव, अमेरिका में आई.एस.एस.ओ. चेप्टरो में सत्संग प्रचारार्थ विचरण, टोरेन्टो केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पदार्पण, सत्संग सभा तथा केनेडा के अन्य चेप्टरो में सत्संग सभा एवं विचरण

१६ से १८ सितम्बर श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या (यु.पी.) शताब्दी महोत्सव अपने शुभ सानिध्य में सम्पन्न किये।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०१४)

१८ श्री कृष्ण जनमाष्टमी के उत्सव प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली पदार्पण । रात्रि में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में ९ बजे से १२ बजे तक कीर्तन भक्ति कार्यक्रम में पदार्पण तथा जन्मोत्सव की आरती अपने हाथों से किये।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया सिद्धेश्वर महादेव के अभिषेक आरती प्रसंग पर पदार्पण।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर (कालुपुर) अमदावाद में श्री गणेश चतुर्थी के प्रसंग पर (श्री गणेशजी की आरती अपने वरद् हाथों से किये।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर सत्संग सभा में पदार्पण।

भगवान के पांच भेद

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

श्रीजी महाराज लोया के १८ वें वचनामृत में कहे हैं कि भगवान का निश्चय होना बड़ा कठिन है। निश्चय की बात बड़ी अटपटी है। जिसे कहने में भी डर लगती है ? जो इसे समझ नहीं पाता उसमें दोष भी आ जाता है। इस तरह कहकर आगे कहते हैं कि भगवान सच्चिदानंद रुप है और वे तेजस्वरुप हैं। अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति हैं। राजाधिराज हैं। सभी के नियन्ता हैं। सभी के अन्तर्यामी हैं। वे ही सुख स्वरुप हैं। सदा द्विभुज रहते हैं लेकिन कभी अपनी इच्छा से चतुर्भुज, अष्टभुज सहस्त्रभुज भी धारण करते हैं। वे ही भगवान मत्स्य, कच्छप, वाराहादि रुप एवं रामकृष्णादि रुप किसी कार्य विशेष के लिये धारण करते हैं। लेकिन अपने मूल स्वरुप का त्याग करके अवतार धारण नहीं करते। वही भगवान अनंत ऐश्वर्य शक्ति के साथ मत्स्य-कच्छपादि रुप को धारण करते हैं।

इसी तरह भगवान कार्यवशात् अनन्त अवतार को धारण करते हैं। इस विषय में शास्त्रकारों ने भगवान के पांच स्वरुपों का वर्णन किया है। भगवान की लीला का कोई पार नहीं है। फिर भी भगवान वेद व्यास द्वारा रचित शास्त्रों के अनुसार पांच भेद संप्रदाय में सर्वमान्य है - (१) पर (२) विभव (३) व्यूह (४) अर्चा (५) अन्तर्यामी

(१) पर : पर स्वरुप स्वयं स्वतंत्र, सर्वकर्ता, नियामक मूलस्वरुप, अक्षरादिक के नियंता, पूर्ण पुरुषोत्तम, परब्रह्म परमात्मा अवतारी अक्षरधामाधिपति।

(२) विभव : विभव अर्थात् राम - कृष्ण - मत्स्य - कच्छप वराह - कपिल - दत्तात्रेय - नरनारायणादिक २४ अवतारों में ६ भेद कहा गया है। (१) अंश (२) आवेश (३) विभूति (४) कला (५) पूर्ण (६) परिपूर्ण (७) ये छ भेद होते हुये भी समर्थपना को विना प्रगट किये हुये ब्रह्मलीला करते रहते हैं, परंतु स्वरुप में भेद नहीं है। रुप में भेद होते हुये भी स्वरुप में भेद नहीं होता है।

(३) व्यूह : व्यूह अवतारों में वासुदेव, प्रकृति - पुरुष, प्रधानपुरुष, वैराजपुरुष, संकर्षण, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, त्रिगुणात्मक ग्रहण करके सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति - लय का कार्य करते हैं। जैसा गुण हो वैसी लीला करते हैं जीव को नाना प्रकार के सुख दुःख के दाता पुरुष रुप में पुरुषोत्तम स्वयं व्यूहरुप में रहते हैं।

(४) अर्चावतार : अनेक प्रतिमाओं को अर्चावतार कहते हैं। ये प्रतिमायें श्रीमद् भागवत के एकादश स्कन्धमें आठ प्रकार की बताई गयीं है। (१) धातु - तांबा, पीतल, चांदी, सुवर्ण कांसा। (२) पाषाण - सफेद, काला पत्थर, संगमरमर तथा अन्य पत्थर। (३) काष्ठ - लकडी की। (४) चित्र की - कपड़ा कागज इत्यादि के ऊपर प्राकृतिक वनस्पति के रंगो से बनाई गई। (५) चन्दन - माटी, मारा इत्यादि से भीत के ऊपर लीपकर बनाई हुई। रेती - रेती में कुछ पदार्थ मिलाकर बनाई हुई मूर्ति (७) मणीमयी - हीरा - माणेक - मणी नीलमणी समकणी, केत मणी। (८) मनोययी - अपने मन की कल्पना से पूजा - ध्यान द्वारा प्रत्यक्षीकरण होता है। अपने हृदयाकाश में धारण की हुई अथवा नेत्र में अथवा सन्मुख धारण की हुई अथवा अन्यत्र अगम स्थल पर कल्पना की हुई जैसे अक्षरधाम का वर्णन सुनकर उसकी कल्पना के द्वारा अक्षराधिपति के स्वरुप को धारण करके सेवा पूजा करनी चाहिये। इसे मनोमयी कहते हैं। इस आठ प्रकार के अलांवा प्रतिमाओं की पूजा - सेवा नहीं करनी चाहिये। आजकी टेक्नोलोजी में अलग - अलग मूर्तियों को बनाकर पूजते हैं। मुमुक्षु लोगों द्वारा भागवत में

कहे अनुसार आठ प्रकार के मूर्तियां की पूजा करनी चाहिये। वर्तमान में रसायन से बनी हुई फायबर काष्ठीक की मूर्तियों का प्रचार खूब हुआ है। ऐसी मूर्ति आठ प्रकार में से एक भी नहीं है। इसलिये बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिये कि जहाँ से मूर्ति लाये हों वहाँ वापस करदें। आठ प्रकार की मूर्ति के सिवाय पूजा नहीं करनी चाहिये। भगवान व्यासजी तथा श्रीजी महाराजने गढडा प्र. ४८ में तथा ६२ वें में इसका विस्तारपूर्वक विवेचन किया है। भगवान का दिव्य चैतन्य भाव आठ प्रकार की मूर्तियों में ही निवास करता है। अपना भाव होगा तो चार अंगुली प्रमाणवाली मूर्ति में अक्षरधाम के अधिपति बिराजमान होकर फल प्रदान करेंगे। लेकिन फाइबर की मूर्ति तो सर्वथा वर्जनीय है। इस में जो रसायन मिलाया जाता है। उसकी सभी जानकारी विषय जानकारों के पास उपलब्धहै। इष्टदेव का स्वरुप तथा मंदिरो में चित्रप्रतिमा स्वयं के घर में पूजनीय हैं।

(५) अन्तर्यामी : सभी जीवों के हृदय में कर्मफल भोगने के लिये अन्तर्यामी स्वरुप में भगवान विराजमान रहते हैं। जीव को जाग्रत - स्वप्न - सुषुप्ति जैसी अवस्था में भी भगवान ही कर्म फल प्रदाता हैं। माता जिस तरह बालक को भोजन कराती है उसी तरह भगवान जीव के कर्मफल को व्यवस्था करते हैं। अवस्था इतनी अधिक विकट होती है कि जीव स्वतंत्र रुप से एक अवस्था से दूसरी अवस्था में नहीं जा सकता। जीव रात्रि में सुषप्ति अवस्था हो उसे जागृत अवस्था में लाने के लिये अन्तर्यामी जब कृपा करते हैं तभी वह जागृत अवस्था में आता है।

इस तरह शास्त्रों में भगवान के अवतारों का संक्षिप्त में वर्णन किया गया है। सभी संप्रदाय वाले भेद स्वीकार करते हैं। अपने संप्रदाय में भी इसे स्वीकार किया गया है। श्रीजी महाराजने वचनामृत में इस भेद को यथार्थ माना है। जिस वात को अपने इष्टदेव प्रमाणित करें वह कल्याणकारी होता है। ग.म. ७ अक्षरब्रह्म, ईश्वर, जीव, माया, माया ना कार्य जे ब्रह्मांड एमने विषे जे श्रीकृष्ण भगवानने अन्तर्यामी कहेवा ए भगवाननुं अन्वयपणुं छे। ''ग.प्र. १३ में श्री कृष्ण भगवान पोतानी शक्ति तेणे सहित जीव जीव प्रत्ये अन्तर्यामी रुपे रह्या छे। ग.म. ४१ पुरुषोत्तम भगवाने पोते करी एवी जे नाना प्रकारनी योनियों तेमने विषे कारणपणे अन्तर्यामी रुपे करीने न्यूनाधिक भावे प्रकाश करे छे।

ग.प्र. ५२ एके जे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम नारायण छे तेज वासुदेव - संकर्षण अनिरुद्धरुपे थाय छे। ग.प. ६६ तथा ७८ अने लोया-७ मे चतुर्व्यूह नी वात करी छे। लोया-४ में भगवाननी मूर्ति नो सदा एक सखी छे तो पण भगवान पोतानी मूर्तिने ज्यां जीवे देखाडी जोइये त्यां तेवी पोतानी इच्छाए करीने देखाडे छे। अने ज्यां जेटलो प्रकाश करवो घटे एटलो प्रकाश करे छे। लो-१४ मां पोताना अक्षरधाम ने विषे सदा दिव्य आकार थका विराजमान छे ने ते सर्वे जे अवतार ते तेना छे। ग.म. १३ सर्व अवतार पुरुषोत्तममांथी प्रगट थाय छे अने पाछा पुरुषोत्तमने विषे लीन थाय छे। वडताल-२, १८ तेज भगवान रामकृष्णादिक अवतार धारण करे छे अने वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध चतुर्व्यूह रुपे वर्ते छे ऐसे पांच प्रकार के भेदका निरुपण वचनामृतमें से मिलता है। इस तरह परमात्मा के पांच भेद हैं।

दीपोत्सव कार्यक्रम

आश्विन शुक्ल-९ शुक्रवार ता. ३-१०-१४ को पुष्य नक्षत्र होने से हिसाब लिखने के रजिस्टर खरीदने का मुहूर्त अच्छा है।

धनतरेस : आश्विन कृष्ण-१३ मंगलवार ता. २१-१०-२०१४ महालक्ष्मी पूजन दोपहर में ३-१६ से ४-४२ तथा सायंकाल ९-०० से १-५० बजे।

काली चौदश : आश्विन कृष्ण-१४ बुधवार ता. २२-१०-२०१४ हनुमानजी महाराज का पूजन सायंकाल ६-४५ बजे।

दीपावली : आश्विन कृष्ण-३० गुरुवार ता. २३-१०-२०१४ समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन सायंकाल ६-४५ बजे अमदावाद कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों विधिवत संपन्न किया जायेगा।

नूतन वर्ष सं. २०७१ : कार्तिक शुक्ल-१ शुक्रवार ता. २४-१०-२०१४, गोवर्धन पूजा

मंगला आरती प्रातः ५-०० बजे।
शृंगार आरती प्रातः ६-३० बजे।
राजभोग आरती प्रातः १२-०० बजे।
अन्नकूट दर्शन दोपहर १२-०० बजे से ३-३० बजे तक।

श्रीहरि के ६ठ्ठे, ७ वें तथा ८ वें वंशज के हाथों से संपन्न होगा। नूतन वर्ष को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर में अपनी आफिस में सभी को दर्शन देंगे।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले भक्त अपनी बही लाल कलर में कपड़े में पता-फोन-मोबाईल नंबर लिखकर मंदिर की आफिस में ४००/- रुपये भरकर रसीद प्राप्त करलें। (श्री कमलेशभाई गोर)

प्रसादीना पत्रोनुं आयमन

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

मूलपत्र :

आचार्य पांडे केशवप्रसादजी
अयोध्याप्रसादजी महाराज

श्री नरनारायणदेवना चरण कमल समीप शुभ स्थान श्री अमदावाद थी लिखावित आचार्य श्री केशवप्रसादजी महाराज अयोध्याप्रसादजी महाराज ॥श्री श्री ॥

''स्वस्ति श्री झालावाड देश महाशुभ स्थाने उत्तमोत्तम परम पवित्र श्री प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमचरण कमलोपासक श्रीजी महाराज कृत मर्यादापलक एवं सर्व शुभ उपमायोग्य हरिभक्त बाई भाई समस्त अमारा जयश्री स्वामिनारायण पूर्वक शुभाशीर्वाद वांचवा ।

अत्र: श्रीजी महाराजना प्रतापथी कुशल छे ने तारी कुशलतानो पत्र लखवो । बीजुं विशेष लखवा कारण ए छे जे तमारा सर्वेनी शुभ वासनानी वृद्धि ने अर्थे ने अशुभ वासनानी निवृत्तिने अर्थे सर्वे हरिभक्ते श्रीजी महाराजनी आज्ञाप्रमाणे वरसोवरस पोतपोताना नामनो धर्मादो आपवो । ने नामना धर्मादाने उधरावावा सारु साधु त्याग वल्लभदासजीनुं मंडल मोकल्युं छे । तेमने श्रीजी महाराजनी आज्ञा प्रमाणे उघरावी आपजो ते अमनो पहोंचशे । ने जेणे नाम लखाव्युं न होय तेमणे पोतानुं नवुं नाम लखाववुं एमां श्रीजी महाराजनी अति प्रसन्नता छे । ने पोताना गाममां मंदिर विगेरे दरेक धर्म संबंधी कार्य आवे तेमां नामनो धर्मादो वापरवो नहि एवी श्रीजी महाराजनी आज्ञा छे तेमां फेर पाडवो नहिं । ने नित्य प्रत्ये मंदिरमां आववुं ने कथावार्ता भजन स्मरण नो अभ्यास राखवो । ने आ पत्रनी अवधि-

संवत १९३३ - कार्तिक शुक्ल-१५ थी लईने संवत १९३४ ना कारतक सुदी-१५ पर्यंत छे । तार वद्येआपत्र मानवो नहि । लिखितं पुराणी खुशालप्रभुरामना जयश्री स्वामिनारायण वांचज्यो । संवत १९३३ ना कार्तिक सुदी-१५

विवरण : संप्रदाय में आश्रित मात्र के अन्न-वस्त्र का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व श्रीहरि ने स्वयं स्वीकार किया है । इस लिये हमें प्रभु का भजन करके सदा आनंद में रहना चाहिये । इस लोक में व्यवहार के लिये धन की आवश्यकता होती है । सभी मनुष्य अपने पुरुषार्थ तथा भाग्य के अनुरुपधन की प्राप्ति करते है । इसके लिये महाराज ने शिक्षापत्री में आज्ञा की है कि जो भी पुरुषार्थ से धन की प्राप्ति हो उसमें से १० वाँ या वीसवां भाग प्रभु को अवश्य अर्पण करना चाहिये । बडे संत कहते है कि सुखी होने के लिये गरीब व्यक्ति भी दशवां भाग अवश्य दान करें ।

भगवान तो राजाधिराज है उन्हें किसी से कुछ चाहना नहीं है । वे सभी को देने के लिये विराजमान हैं । कण लेकर मन देने की वात है । वे मात्र हम सभी के भाव को देखते हैं । यह जीव यदि क्षणभर के लिये लोभ-मोह का त्याग करदे और योग्य स्थान पर दान करे तो धन की कमी कभी नहीं होती । इसी दान से शिखरी मंदिरो का भरण पोषण होता है । मंदिर में विराजमान देवों की पूजा अर्चना का उत्तरदायित्व आचार्यश्री का है, वे योग्य - पवित्र - विद्वान - तपस्वी - ब्रह्मचारियों से करवाते हैं ।

मंदिर के निर्माण का उत्तरदायित्व पूरे सत्संग समाज का है । जब श्रीहरि बड़े - बड़े उत्सव करते तो खर्च कहाँ से आता था सभी सत्संग की तरफ से भेंट रुप में प्राप्त हो जाता था । आज महंगाई की चरमसीमा है, बिजली - पानी- भोजन अन्न-वस्त्र तथा अन्य बहुत सारे खर्च मदिर के हैं जो संसारी लोगों को होते हैं वह खर्च यहाँ भी होता है । उन सभी खर्च का उत्तरदायित्व हम सभी सत्संग समाज का है । इसलिये १० या वीस प्रतिशत प्रत्येक सत्संगी अपनी कमाई में से मंदिर में विराजमान प्रभु को अवश्य संकल्प पूर्वक भेंट दे । इससे अपना धन परिमार्जित होगा ।

इसके अलांवा प्रत्येक नर-नारी, त्यागी-गृही को अध्यात्ममार्ग में आगे बढने के लिये श्रीहरि ने स्वयं अपने स्थान पर गुरु के रुप में धर्मवंशी आचार्य श्री का स्थापन किया है । हम उनसे मंत्रदीक्षा लेकर श्रीजी की आज्ञा में रहे तभी स्वामिनारायण के सच्चे आश्रित कहे जायेगें । स्वयं

कंठी धारण करने से तिलक लगाने से, माला फेरने से आत्यंतिक कल्याण नहीं होता । इसके लिये आचार्यश्री से मंत्रदीक्षा लेना आवश्यक है। शिक्षापत्री के अनुसार आज्ञा का पालन करना आवश्यक है।

आचार्यश्री को गुरुदक्षिणा के रुप मे प्रतिवर्ष घर में जितने व्यक्ति हों उनके हिसाब से आठआना कृष्णार्पण करने की वात कही है। आज के समय में आठ आने की जगह पर १० रुपये का निश्चय किया गया है। मंदिर तथा आचार्य पैसों के लिये नहीं हैं बल्कि दान-धर्म के माध्यम से सत्संग मसाज का हित करना है। जो जीव अपने योग में आता है धर्मवंशी आचार्यश्री की शरणागति स्वीकार करता है उसका निश्चय ही कल्याण होता है । श्रीजी की आज्ञा के अनुसार दान-धर्म करना चाहिये । देव भाग बिना दिये उपभोग करते है तो प्रयश्चित के अधिकारी होते है, इस लिये इसका सदा ध्यान रखकर स्वयं देव-आचार्य का भाग मंदिर में भेंट कर देना चाहिये। इस कार्य से आपके पुण्य में वृद्धि होगी और आप सुखी होंगे । देव-आचार्य की वार्षिक भेंट लेने के लिये त्यागियों का मंडल नियुक्त किया जाता है। यह मंडल गांव बिभाग के हिसाब से प्रेषित किया जाता है। यह मंडल गांव विभाग के हिसाब से प्रत्येक गाँव में घर-घर सत्संगियों से मिलता है। यह प्रक्रिया देश-विदेश में सभी जगहों पर की जाती है । जिससे सभी भक्त अपनी आवक में १०-२० प्रतिशत भाग दान करके अपने कर्तव्य का पालन करें। वह प्राप्तदान प्रत्यक्ष अमदावाद वडताल मंदिर की आफिस में जमा हो जाता है। उसकी पक्की रसीद उस व्यक्ति के नाम से प्रेषित करदी जाती है। इससे जीव का आत्यन्तिक कल्याण बाधित नही होता।

इसके अलांवा आचार्य महाराजश्री लिखते हैं कि श्रीजी महाराज की आज्ञा के अनुसार भेंट लीजियेगा । अर्थात् यह कोई सामान्य वात नहीं है इसे तो स्वयं श्रीमुख की आज्ञा मानकर तथा अपना कर्तव्य मानकर सत्संगी मात्र की यह फर्ज है कि वे देव - आचार्य को समय समय पर दान-धर्मादा करते रहे।

धर्मवंशी आचार्य स्वयं लिख रहे हैं। धर्मवंशी आचार्य स्वयं भगवान के पुत्र हैं, पवित्र ब्राह्मण हैं, स्वभाव से गरीब है, विद्वान विप्र है, ऐसे सुपात्र को दान देने की आज्ञा स्वयं श्रीहरिने की है । इसका महत्व समझना आवश्यक है । आचार्यश्री के अभिलेख में आप आचार्यश्री के शिष्य हैं ऐसा लिखाना आवश्यक है । यहाँ लिखा गया तो अक्षरधाम में लिखा गया ऐसा समझना चाहिये । जीव का आत्यंतिक कल्याण तो होगा ही इसके साथ अन्य को प्रेरणा मिलेगी । इससे श्रीहरि की प्रसन्नता आपके ऊपर उतरेगी । श्रीहरि के दिल में स्थान प्राप्त करना होतो प्रथम आचार्यश्री के हृदय में स्थान प्राप्त करना आवश्यक है । आचार्यश्री की आज्ञा का पालन ही श्रीहरि की प्रसन्नता है । बहुत सारे सुकृत एकत्रित होने पर ही इसप्रकार के कार्य करने का संयोग मिलता है।

स्वयं के गाँव में धर्मकार्य करने का बहुत अवसर आता है, यह समझने लायक है कि जो आप नाम के अनुसार अर्थात् देवको आचार्य को अर्पण कर रहे हैं वह अमदावाद या वडताल की जगह किसी अन्य स्थान पर तो नहीं जा रहा है। दान-धर्मादा देने के तथा प्राप्त करने के अधिकारी मात्र मूलपीठ स्थाने के गादीपति होते है अन्य नहीं - इसका सदा ध्यान रखना चाहिये। कमी ऐसा नही करना चाहिये कि जो रकम यहाँ समर्पित करनी है उसमें से कुछ भाग अन्यत्र देदी जाय, इसमें बड़ा अपराधहोने की संभावना है।

कभी किसी को संयोगवश ख्याल नहीं आवे तो पूज्य महाराजश्री से नम्रतापूर्वक निवेदन करके ज्ञान प्राप्त करलेना चाहिये इससे हित होगा, अन्यथा बड़ा अनर्थ होगा। हरिभक्तों को यह समझना चाहिये कि दान धर्मादा करने मात्र से कल्याण नहीं होता, हाँ, इतना करने से कल्याण की पूर्व तैयारी है ऐसा कहा जायेगा। इसके अलांवा महाराजश्री की यह भी आज्ञा है कि प्रतिदिन मंदिर आना, कथा-कीर्तन-भजन का श्रवण करना भी उतना ही अनिवार्य है। कथा-कीर्तन-भजन के श्रवण से जीव में सच्चागुण उतरता है। मन की एकाग्रता बनती है, श्रीहरि की मूर्ति में मन पिरोजाता है। इन्द्रियों का निग्रह होता है। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इत्यादि सूक्ष्म तत्व परमात्माभिमुख हो जाते हैं। इस तरह जीवन पर्यंत करते रहने से जीव का आत्यंतिक कल्याण होता है। श्रीहरि की सर्वोपरि उपासना तथा शिक्षापत्री में सभी आज्ञाओं का पालन नि:श्रेयस का साधन है।

धर्मवंशी आचार्य से मंत्रदीक्षा लेकर उनके अभिलेख में अपने शिष्यत्व का उल्लेख कराकर प्रतिवर्ष दान-धर्मादा महाराज की आज्ञानुसार समय से भेंट कर देना चाहिये।

करीब १३५ वर्ष पूर्व अमदावाद श्री नरनारायणदेव गादी के द्वितीय आचार्य प.पू. केशवप्रसादजी महाराजश्री द्वारा लिखवाया गया यह पत्र आज भी श्री स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. ११ में रखा हुआ है। जिसका दर्शन करके सभी लोग जीवन को धन्य बनायें।

श्रीहरि की प्रागट्यभूमि छपैया की अलौकिक महिमा

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

अक्षराधिपति छपैया निवासी श्री घनश्याम महाराज के अपर स्वरुप, श्री हरिके आठवे वंशज भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री ता. २०-१०-१४ (लाभ पंचमी) से ता. ५-११-१४ तक १५ से २५ वर्ष के युवानों के लिये दिव्य युवा शिबिर का आयोजन किया है। प.पू. आचार्य महाराजश्री शिबिर के माध्यम से युवानों को स्वतंत्र सुख देते आये हैं। उन्हीं की राह पर प.पू. लालजी महाराजश्री अपने सानिध्य का सुख प्रदान कर रहे हैं। श्री नरनारायणदेव की अलौकिक कृपा से इस दिव्य शिबिर के गंगा प्रवाह में आजका युवान स्नान से वंचित न रह जाय इसके लिये श्री स्वामिनारायण मासिक के माध्यम से छपैयापुर माहात्म्य का सक्षिप्त आलेखन किया है।

सर्वावतारी श्रीहरिने छपैया की पावनकारी भूमि को इग्यारह वर्ष के अपने सोलह चिन्होवाले चरणों से अंकित करके अत्यंत पावनकारी किया है । इस छपैयापुर की तथा नारायण सरोवर की महिमा शारदादिक कोटि कल्प तक बखान करें तो भी संभव नहीं है। देवी शारदा, नारदजी, शेषनारायण तथा शिवजी जिसका दिव्य गुणगान निरन्तर करते रहते हैं। शिव - सनकादिक ब्रह्मा, इन्द्रादि देव तथा मुनि इस पुर का नित्य दर्शन करने आते हैं। अन्य अनेक धाम की इस धाम से तुलना नहीं कर सकते इस लिये कि सर्वोपरि श्रीहरि की अवतार भूमि सर्वोपरि है। इसीलिये श्री हरि का पिता धर्मदेव के प्रति ऐसा शब्द है कि -

इस छपैयाधाम के चारो तरफ १२ योजन तक रात्रि-दिन जो छपैयापुर ऐसे उच्चारण करेगा, श्रवण करेगा, उसके सभी पाप नष्ट हो जायेंगे । इस पुरी की रज भी उड़कर शरीर में लगजायेगी तो मनुष्यपाप से रहित होकर स्वर्ग को प्राप्त करेंगे । इस नारायण सरोवर का आचमन करने वाला वैकुंठ को प्राप्त करेंगा। जो मनुष्य इस सरोवर में स्नान करेंगे वे गोलोक धाम को प्राप्त करेंगे । जो हमारा स्मरण करते हुये स्नान करेंगे अक्षरधाम को प्राप्त करेंगे। जो इस सरोवर के किनारे तथा गौघाट (विश्वामित्री नदी) के किनारे, मीन सागर के किनारे, खांपा तलावड़ी के किनारे, श्रद्धादिक क्रिया करेंगे वे भी अक्षरधाम को प्राप्त होंगे। इस ब्रह्मांड में कोई ऐसा तीर्थ नहीं है जिसे छपैया की उपमा दी जा सके। इस भूमि की इतनी महिमा है कि कोटि भाग की बराबरी चार धाम, सातपुरी तथा अन्य जो भी तीर्थ है वे नहीं कर सकते। इस सरोवर में अडसठ तीर्थ निवास करते हैं। भगवान के भक्त तथा साधु एवं ब्राह्मण को भोजन कराकर जो वस्त्र-दक्षिणा, गाय इत्यादि का यहाँ पर दान करेंगे तथा भगवान की प्रतिमा को भोग (थाल) अर्पण करेंगे वे मनुष्य शरीर का त्याग करके अक्षरधाम में भगवान के साधर्म्यपना को प्राप्त करेंगे।

श्रीहरिलीला सिंधु ग्रंथ में श्री वैष्णवानंद ब्रह्मचारी ने लिखा है कि जहाँ प्रभु ने अवतार धारण किया वह पुरी अक्षरधाम है। छपैयापुर की महिमा का वर्णन करते हुये विष्णु-ब्रह्मा, शिव, शारदा, श्रुति, शेष पार नही पाते तो सामान्य की क्या वात ? श्रीदामा आदि भगवान धाम के मुक्त भी इस छपैयापुरधाम जन्म स्थान की महिमा का गुणगान करने में समर्थ नहीं हो पाते । चौदहलोक में, सातद्वीप में, तथा भरतखंड के आर्यावर्त में इस स्थान जितना कोई पवित्र नहीं है। अन्य तीर्थ क्षेत्र तथा इस नारायण सरोवर में करोडो गुना अन्तर है। इस स्थल में तो परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण प्रभु अपने अनंत ऐश्वर्य के साथ प्रगट हुये थे। जल-स्थल सभी स्थानों पर विचरण किये थे। दिव्य लीला किये थे।

जो इस दिव्य धाम का निर्निमेष दृष्टि से दर्शन करता है उसके अनंत जन्मों के पाप नष्ट हो जाते है। भावना के साथ जो नरनारी इस तीर्थ का दर्शन करने जाते हैं उनका भवबंधन कहा जाता है । छपैयापुर के जो भी पशु, पक्षी, वृक्ष (स्थावर - जंगम) पदार्थ है वे मोक्ष को प्राप्त हो जाते है। देश के सभी तीर्थ दश-दश बार करे तथा विधिके अनुसार खूब दानभी करे इससे जो फल की प्राप्ति होती है वह फल प्राप्ति मात्र छपैया दर्शन से होती है। जिस कुल के पुत्र - परिवार छपैयाधाम की यात्रा करते हैं उनके पितर अनंत - सुख को प्राप्त करते हैं। मन, वाणी, शरीर से किये गये सभी प्रकार के पाप छपैया दर्शन मात्र से जल जाते हैं। पुत्र की इच्छावाले को पुत्र की प्राप्ति होती है जिस भावना से जो आता है वह अपने इच्छित फल को प्राप्त करता है। जो छपैया जाकर - शंख - चक्र आदि आयुधको धारण करता है अर्थात् इन सभी को अपने शरीर पर छापा लेता है

पेईज नं. २०

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

भगवान श्री स्वामिनारायण अहिंसा के पुजारी थे, उन्होंने डभाण, जेतलपुर, भुज इत्यादि अनेक स्थलों पर महाविष्णु याग कराकर ब्राह्मणो को दक्षिणा देकर तृप्त किया था। दुराचारियों के विरोधहोने पर भी एकबार उन्हींने जेतलपुर में १८ दिन का महाविष्णुयाग किया था। वेद विधिको अच्छी तरह जानने वाले ब्राह्मणो को याग में नियुक्त किये थे तथा परब्रह्म परमात्मा स्वयं यजमान बनकर यज्ञ का कार्य किये थे। हजारो मनघी तथा यज्ञ द्रव्य की आहुती दिये थे। उस समय श्रीजी महाराजने स्वयं यज्ञ में जिन पूजा पात्रो का उपयोग किया था, थे पूजापात्रों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने सुरक्षित अपने पास रखा था, जिन्हे श्री स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. २ में रखा गया है।

जो पूजापात्र श्रीजी के करकमल का स्पर्श पाये है, जिनसे यज्ञविधिकी क्रिया सम्पन्न हुई है, जो पात्र वेदध्वनि के साक्षी हैं, जो पात्र साक्षात् वरुण देव का संसर्ग प्राप्त किये हों, जिनके स्पन्दन में आज भी वेद के ऋचाओं की ध्वनि आज भी मुखरित हो रही है, ऐसे प्रसादी के पात्रों का सभी हरिभक्त महिमापूर्वक दर्शन करें।

– प्रो. हितेन्द्रभाई एन. पटेल

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अगस्त-२०१४

रु.। १,५१,०००/- श्री स्वामिनारायण मंदिर - टोरेन्टो केनेडा	रु.।११,०००/- प.भ. विनुजी गोबरजी डाभी (डांगरवा)
रु.।५१,०००/- प.भ. पारुलबहन भावेशकुमार पटेल यु.एस.ए. (डांगरवा) कृते शारदाबहन अमृतभाई कपिलाबहन दशरथभाई पटेल	रु.।१०,०००/- प.भ. डॉ. वसंतभाई बालू, अमदावाद रु.।५,००१/- प.पू. कमलेशभाई एच. शाह, अमदावाद रु.।५,००१/- प.भ. जय मुकेशकुमार पटेल, साबरमती रु.।५,००१/- प.भ. शारदाबहन विनोदभाई शेलत, अमदावाद
रु.।११,०००/- प.भ. पृथ्वीसिंह पूंजाजी - डाभी (डांगरवा)	

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अगस्त-२०१४)

ता. ३०-८-१४ (प्रातः) श्री नरनराायणधेव महिला मंडल - कृते भावनाबहन बालवा
(सायंकाल) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - उनावा
कृते नयनाबहन सुमनभाई पटेल - गांधीनगर

ता. ९-८-१४ प.भ. नानजीभाई शामजीभाई - भुडिया - माधापर (कच्छ)

ता. १७-८-१४ श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज - वासणा मंदिर पू. ध्यानी स्वामी की प्रेरणा से कृते राजूभाई ठक्कर

ता. २९-८-१४ प.भ. सोनी बाबूलाल मगनलाल परिवार - सरावाला कृते महेन्द्रभाई, भरतभाई, जीतेन्दर्भई, रमणभाई, कमलेशभाई, हरेशभाी, अ.नि. राजेशभाई, अश्विनभाई तथा संजयभाई।

ता. २४-८-१४ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - प्रतापपुरा कृते रीटाबहन ठक्कर तथा सुमनभाई पटेल

ता. २९-८-१४ प्रसादी के श्री गणपतिदादा का समूह महापूजन कृते रश्मिकान्तभाई भावसार

ता. ३१-८-१४ अ.नि.प.भ. रमेशभाई बापूदास पटेल (चांदीसणावाला) कृते मितेषभाई पटेल - कलोल

प.पू. बड़े महाराजी के आशीर्वाद से
श्री स्वामिनारायण मंदिर - शिकागो के पाटोत्सव प्रसंग पर
श्री स्वामिनारायण मंदिर - लूइसवील के मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर
श्री स्वामिनारायण मंदिर - टोरेन्टो - केनेडा के पाटोत्सव प्रसंग पर
श्री स्वामिनारायण मंदिर - फ्लोरिडा के पाटोत्सव प्रसंग पर
श्री स्वामिनारायण मंदिर - बोस्टन के पाटोत्सव प्रसंग पर

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

પ.પૂ. ધ.ધૂ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮ કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞા તથા આશીર્વાદથી
વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર-કાલુપુરમાં બિરાજતા
શ્રી નરનારાયણદેવના જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા સુવર્ણ સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪ થી ૨૮ ડિસેમ્બર-૨૦૧૪

મહોત્સવ સ્થળ

શ્રી નરનારાયણ નગર, તપોવન સર્કલ, મોટેરા ગામ, એસ.પી. રીંગ રોડ, અમદાવાદ.

અધ્યક્ષશ્રી : પ.પૂ. ભાવિ આચાર્યશ્રી ૧૦૮ શ્રી વજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

આયોજક

મહંત સ્વામી સ.ગુ. શા. સ્વામી શ્રી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા સ્કીમ કમિટી
તથા શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ સમિતિ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર - અમદાવાદ-૧
ફોન. ૦૭૯-૨૨૧૩૨૧૭૦, ૨૨૧૩૬૮૧૮

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪

સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ અનંત જીવોનું કલ્યાણ કરવા અનંતમુક્તોને સાથે લઈ મનુષ્યદેવ ધારણ કરી પૃથ્વીલોક પર પધાર્યા. ૪૯ વર્ષ સુધી પોતાની અપાર દયા અને દિવ્ય ઐશ્વર્ય વડે અનંતજીવોને અક્ષરધામના સુખભોગી બનાવ્યા અને એ પરંપરા અવિરત ચાલ્યા કરે એ માટે દેવ, આચાર્ય, સંત અને સત્‌શાસ્ત્રની કલ્યાણકારી પરંપરા પ્રવર્તાવી. શ્રીહરિએ કરેલા અનેક અલૌકિક કાર્યો પૈકીનું શિરમોર કાર્ય એટલે મંદિરોનું નિર્માણ. ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની આજ્ઞાથી આજથી લગભગ ૧૯૨ વર્ષ પહેલા સ.ગુ. આનંદાનંદ સ્વામીએ ગુજરાતના મુખ્ય નગર અમદાવાદમાં વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરનું નિર્માણ કર્યું અને સર્વોપરી શ્રીહરિએ સ્વહસ્તે બાથમાં લઈને સ્વસ્વરૂપ શ્રી નરનારાયદેવ પધરાવ્યા. શ્રી નરનારાયણદેવના ઉંબરા પર ઊભા રહીને "આ નરનારાયણ દેવનું સ્વરૂપ અને અમારા સ્વરૂપમાં લેશમાત્ર ફેર નથી." "જે એમ જાણે જે આ નરનારાયણદેવ અને ભગવાન સ્વામિનારાયણ જુદા છે તેણે અમને ઓળખ્યા જ નથી." "આ નરનારાયદેવની મૂર્તિ સત્સંગી માત્ર એ પૂજામાં રાખવી." આવા મહિમા વચનો સ્વમુખે કહ્યાં એવા મહાપ્રતાપી શ્રી નરનારાયણદેવનું મંદિર સમયના ઘસારે ઘસાતા જીર્ણોદ્ધારની જરૂરિયાત ઉભી થઈ. જે તે સમયે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી તે સમયના મહંત સ.ગુ. પી.પી. સ્વામી (જેતલપુર)એ કાર્યનો આરંભ કર્યો. ત્યારબાદ પૂ. નિર્ગુણ સ્વામી તથા પૂ.નારાયણસ્વરૂપ સ્વામીએ કાર્યને આગળ ધપાવ્યું. પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી વર્તમાન મહંત સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવ સ્કીમ કમિટિએ આ જીર્ણોદ્ધારના કાર્યને પુરજોશમાં વેગ આપ્યો જે હવે પૂર્ણતાને આરે છે. સાથો સાથ દેવોના સુવર્ણ સિંહાસન પર જીર્ણ થતા તે સ્થાને નૂતન સુવર્ણ સિંહાસન બનાવવાનો નિર્ધાર કર્યો જે પણ પૂર્ણ થશે. જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા નૂતન સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટનના પાવન પ્રસંગે પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની અધ્યક્ષતામાં સૌ સંતો ભક્તોના સાથ સહકારથી ભવ્યાતિભવ્ય "શ્રી નરનારાયદેવ મહોત્સવ" તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪ પર્યંત ધામધૂમથી ઉજવવાનું નિર્ધારેલ છે. તો આવો આપણે સૌ સાથે મળી આપણું તન, મન અને ધન શ્રી નરનારાયણદેવના ચરણોમાં સમર્પિત કરી આ ઉત્સવને ઉમંગથી ઉજવીએ.

મહોત્સવ દરમિયાનના આયોજનો

- શ્રીમદ્ સત્સંગીભૂષણ અંતર્ગત શ્રી નરનારાયણદેવ માહાત્મ્ય કથા
- એક દિવસીય શ્રી હરિયાગ (યજ્ઞ)
- 3 દિવસ સમૂહ મહાપૂજા
- મહાઅભિષેક, છપ્પન ભોગ અન્નકૂટ
- શ્રી નરનારાયણદેવની નગર યાત્રા
- પ્રદર્શન
- શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર અખંડ ધુન
- બ્લડ ડોનેશન કેમ્પ
- સર્વ રોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ દિવાઓ વડે કાલુપુર મંદિરની સમુહ આરતી
- શ્રી નરનારાયણદેવ બાલમંડળ તથા બાલિકામંડળ દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક આયોજનો

- ૨૫૧ ગામડે સત્સંગ સભાઓ
- ૧૫૧ મીનીટની ૨૫૧ ગામડે અખંડધૂન
- ૫૧ કરોડ "શ્રી સ્વામિનારાયણ" મહામંત્ર લેખન
- જનમંગલ - ૧,૨૫,૦૦,૦૦૦, વચનામૃત - ૫૧૦૦, ભક્તચિંતામણી - ૫૧૦૦ પાઠ
- પદયાત્રા દ્વારા કાલુપુર શ્રી નરનારાયણદેવ દર્શન
- ૧૧૦૦૦ શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન સભ્યપદ ઝુંબેશ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં સામાજીક આયોજનો

- ૧,૨૫,૦૦૦ વૃક્ષારોપણ
- ૨૧૦૦ બોટલ બ્લડ ડોનેશન તથા સર્વરોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ શૈક્ષણિક સાધનોનું વિતરણ
  (ગામડાઓના બાળમંડળના વિદ્યાર્થીઓને)
- વ્યસન મુક્તિ અભિયાન
- ૧૫૧ અપંગોને ટ્રાઈસિકલ વિતરણ

आपनो सहयोग

આ મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં આપ આપના પરિવારજનો, મિત્રો સાથે મળી માળા, દંડવત્, પ્રદક્ષિણા, જનમંગલ-વચનામૃત-ભક્તચિંતામણીના પાઠ, મહામંત્રલેખન, પદયાત્રા જેવા નિયમો લઈ અથવા લેવડાવી વિશેષ ભજન કરશો. (જે માટે નોટબુક તથા ફોર્મ આપણા શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન અથવા તો કાલુપુર મંદિરની ઓફિસમાંથી મળશે.)

આર્થિક રીતે યોગદાન આપી સહભાગી થવા ઇચ્છતા ભક્તો મહોત્સવ દરમિયાન આયોજીત સમુહ મહાપુજા-હરિયાગ તથા અન્ય યજમાન પદનો લાભ લઈ શકશે.

૧૧,૦૦૦/- ૨૧,૦૦૦/-	તા. ૨૫-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ સમૂહ મહાપૂજાનો લાભ મળશે. (પ.પૂ. લાલજીમહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૩૧,૦૦૦/- ૫૧,૦૦૦/-	તા. ૨૬-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના નિવાસસ્થાને નિત્ય ધર્મકુળ દ્વારા પૂજાતા પ્રસાદીના હરિકૃષ્ણ મહારાજની મહાપૂજા(પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૧,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ સર્વાવતારી ભગવાન શ્રીહરિની પૂજામાં રહેલાં અને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજશ્રી જેની દરરોજ પૂજા કરે છે એવા પ્રસાદીના શાલિગ્રામ ભગવાનની મહાપૂજા (પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૨,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ એકદિવસીય શ્રીહરિયાગ (યજ્ઞ)ના પાટલે બેસવાનો લાભ.

આથી વિશેષ સેવા કરીને વિશિષ્ટ યજમાન પદનો લાભ લેવા ઇચ્છતા ભક્તજનોએ કાલુપુર મહંત સ્વામી અથવા આગેવાન સંતોનો સંપર્ક કરવો.

Harikrushna Graphics • 982-5850-559, 987-9961-789

: महामहोत्सव का स्थल
तपोवन सर्कल, मोटेरा गाँव, अहमदाबाद

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सत्संगका बड़ा महत्व है

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

सबसे आगे बाजावाले चलते हैं। इसके बाद संत कीर्तन गाते हुये चलते हैं। साथ में श्री स्वामिनारायण भगवान तथा उनके पीछे सभी गृहस्थ चलते हैं । उनके पीछे बहनें जो भगवान के नामकी धुन गाते हुये नवावास से नारायणघाट की तरफ चलके जा रही हैं । उस में एक घटना घटती है । आश्चर्यवाळी वह घटना है । स्वामिनारायण भगवान जब शाहीबाग विस्तार में बादशाह वाणी पहुंचे कि नारायणघाट से थोड़ी ही दूर पर थे कि कोई अज्ञातव्यक्ति श्रीजी महाराजकी घोडी लेकर लगाम पकड़े हुये वहाँ पहुँच आया। वह कहाँ से आया यह ख्याल नहीं। भक्तों के बीच वह फकीर की तरह दिखाई दे रहा था। श्रीजी महाराज के पास आकर खड़ा हो गया। भक्तों को आश्चर्य होने लगा कि यह कौन है ? उसके केश खुले हुये थे । अंगो में शीशे के आभूषण पहने हुए था। हे भगवान् भगवान बोल रहा था। परमात्मा उसकी तरफ देखने लगे। वह फकीर भगवान को नमस्कार किया। भगवान के चरण में अपने मस्तक झुका दिये। यह कौन है ? वह कोई अन्य नही, दरियावखान स्वयं था । दरियावखान भूतों का राजा था।

स्वामिनारायण भगवान तो जानते ही थे । प्रभुने उसे अभयदान दे दिया। भगवान को विचार हुआ कि इन सभी भक्तों को ख्यालन आना चाहिये। इसलिये पूछते है कि भाई, तुम कौन हो ? और यहाँ आने का क्या कारण है ? दरियावखान ने कहा महाराज ! यह सामने जो विशाल घुम्मट दिखाई दे रहा है, वही हमारा निवास स्थान है। बहुत दिन से आपके दर्शन की राह देख रहा था । आज आपका दर्शन हो गया। हमारा कल्याण हो गया। भगवानने कहा कि यह वात सत्य है, तुम्हारा वैकुंठ में वास होगा । लेकिन यह बताओं कि तूं मेरे पास कौसे पहुँचा ? हमारे पास तुम्हारे जैसे लोग तो पहुंच नही पाते। यह सुनते ही दरियावखान कहता है कि प्रभु ! आपके संतो का मैने सत्संग किया है। भूत भी सत्संग करते हैं। मनुष्य नहीं करपाते। दरियावखान ने कहा कि आपके संत इस धुम्मट चार महीमें तक रहे थे, उनके सत्संग का मुझे लाभ मिला था।

वात ऐसी है कि - स्वामिनारायण भगवानने संतो को आज्ञा की थी कि सभी लोग संस्कृत पढने जाइये । वेद-वेदांत का अभ्यास करिये। मोक्ष के लिये नही बल्कि जगत के हित के लिये, कल्याण के लिये । मुक्तानंद स्वामी को प्रभुने कहा कि अमदावाद जाइये वहाँ किसी विद्वान पंडित से सभी संतो को शास्त्रों का अध्ययन करवाइये । तीस जितने संतो को लेकर मुक्तानदं स्वामी अमदावाद आ पहुंचे, लेकिन सभी को रखे कहाँ ? शहर में अगल-बगल घूमे लेकिन कोई स्थान नहीं मिला, नारायणघाट के पास दरियावखान का घुम्मट उन दिन जन रहित था। भीतर कोई पुजारी भी नही रहता था । संतोने विचार किया कि यह स्थान योग्य है, वह इसलिये कि नजदीक में साबरमती नदी है, स्नान ध्यान करने के लिये अनुकूल रहेगा । यही रहकर अभ्यास करेंगे । एकांत स्थल है । यहाँ कोई आता नहीं है। जाता नहीं है। पंडितजी के पास शास्त्रों का अभ्यास करके दरियावखान घुम्मट में आकर संत अभ्यास करते, पूजापाठ करते, भजन कीर्तन करते और कथा करते। उस घुम्मट में बहुत सारे भूत रहते थे । एक साथ ३० संत धुन करते, कथा करते, वचनामृत का पाठ करते, यह शब्द भूतों के कान पड़ता । एक दिन भूतों की टोली मुक्तानंद स्वामी के पास आई। स्वामीने पूछा आप लोग कौन है ? हम भूत है ? मुक्तानंद स्वामी धैर्य की मूर्ति थे कभी धबड़ाते नही थे । उनके पास कोई भी आता तो बड़ी गंभीरता से उसका उत्तर देते । अपने पास कोई आकर कहे कि हम भूत हैतो क्या हालत होगी। लेकिन मुक्तानंद स्वामी की मुखाकृति में कोई बदलाव नहीं हुआ। स्वामीने पूछा कि क्यों आये हो ? भूतोने कहा कि प्रतिदिन आपके मुख से स्वामिनारायण भगवान की धुन सुनते हैं। कथा सुनते हैं। आप संतो को जो उपदेश देते हैं वह भी हम सुनते हैं । यह सब सुनकर हमारे सभी पाप नष्टहो गये हैं। अब हम क्या करें ?

स्वामीने विचार किया कि - सेवा के सिवाय सद्गति नहीं है । सद्गति की चाहना हो तो सेवा करो । मुक्तानंद स्वामीने कहा कि धुम्मट के अगल-बगल जो भी गन्दकी है उसकी सफाई करो, जिससे संतो को आने जाने में तकलीफ न हो। उन दिनों संत नंगे पैर चलते थे। स्वामी की

वात सुनकर सभी भूत एक-एक पत्थर, पत्ते, कांटे जो भी थे उन्हें बीन डाले। भूतों को काम करते कितना समय। अब वे सभी पुनः स्वामी के पास आ गये कहने लगे अब बताइये क्या करना है। स्वामीने कहा कि - यहाँ से नदी तक के मार्ग की सफाई करडालो। अब बदरिकाश्रम में जाओ। मुक्तानंद स्वामीने उनके ऊपर पानी का छिड़काव किया। और सभी भूत बदरिकाश्रम पहुंच गये। लेकिन भूतों के पतिने कहा कि मैं बदरिकाश्रम नहीं जाऊँगा। मुझे स्वामिनारायण भगवान का दर्शन करना है। स्वामीने कहा कि तो तुम यहीं रहो। स्वामिनारायण भगवान जब साबरमती स्नान के लिये जायेंगे तो यहीं से जायेंगे उस समय तुम्हें उनका दर्शन हो जायेगा। उन्हीं के हाथों तुम्हारी मुक्ति होगी।

यह घटना स्वयं दरियावखान भगवान स्वामिनारायण को सुना रहा है। महाराज ! मुक्तानंद स्वामी के मुख से आपके लीला चरित्रों का मैने श्रवण किया है। संतो के सत्संग प्रताप से मैं आपके पास पहुँचा हूँ। अन्यथा जलकर भस्म हो गया होता। यह सत्संग की महिमा है।

जो कथा - भजन - भक्ति करता है उसके आसपास भूतादिक नहीं आते। इनसे घबराने की जरुरत नहीं। ईश्वरीय शक्ति सभी जगह सहायक होती है। जीवित मनुष्य से डरना चाहिये - वह कभी भी जेब काटलेगा। भूत क्या काटेगा ? मरने के बाद वह स्वयं दुःखी रहता है। भूतयोनी दुःखी होती है सुखी नही रहती। बहुत सारे कर्म तथा वासना के कारण उनकी सद्गति नही होती - इसलिये दुःख के कारण भटकते रहते हैं। वे हमें क्या दुःख देंगे। लेकिन हम स्वयं अपने से घबडाये रहते हैं।

दरियावखान ने कहा कि संतो के मुख से हमने सत्संग सुना है। कथा सुनी है, आपके चरित्रों को सुना है। हमारी आत्मा पवित्र हो गयी है। इसलिये तो मैं आपका दर्शन कर सका। आपका स्पर्श कर सका। प्रभु की भक्ति तथा सत्संग की महिमा अपरंपार है। स्वामिनारायण भगवानने कहा कि - अब तूं बैकुंठ में जा।

नारायणघाट के पास यह दरियावदखान घुम्मट है। इसका निर्माणकार्य बड़ा विशाल है। मुक्तानंद स्वामी ३० संतो के साथ चार महीने तक यहीं पर रहते थे।

प्रिय भक्तों ! शास्त्रों के प्रत्येक पन्नों पर सत्संगकी महिमा लिखी गयी है। प्रगट परमात्मा के उपासक मुक्तानंद स्वामी जैसे संत का सत्संग मिलने से ही ऐसे महिन प्रेतयोनि में रहनेवाले जीव का उद्धार हुआ। इसलिये स्वामिनारायण भगवान ने शिक्षापत्री में प्रतिदिन सत्संग करने की बात की है। जिससे बाहर के तथा भीतर के भूतों का कल्याण हो जाय। जीवन में याद रखने लायक यह है कि सत्संग का प्रताप बहुत बड़ा है।

●

अपनी अहोभाग्य

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

एकवार स्वामिनारायण भगवान लोया गाँव में पधारे। लोया गाँव सुराखाचर का गाँव था। शूरवीरों के घरजाना महाराज को अच्छा लगता था। इस गाँव में नदी के किनारे महाराजने सभा की थी और यहीं पर रहकर भक्तों को उपदेश करते थे।

एकबार सभा में बाहर गांव से कुछ संत पधारे। सत्संग का कार्य करके, सत्संग की सेवा करके सभा में आकर महाराज को प्रणाम किये। उस समय महाराजने साधुओं के मस्तक पर चोट की निशान देखकर पूछे कि यह चोट कैसे लगी ? संतोने कहा कि महाराज ! कहीं लकड़ी की चोट लग गयी होगी। महाराजने कहा कि आप लोग अपना डुपट्टा उतारिये। अपना शरीर दिखाइये। वे अपनी शरीर को बताये तो उनकी शरीरमें लकडी से प्रहार किया हुआ था जिसकी साट प्रत्यक्ष दिखाई दे रही थी। यह देखकर महाराज को अत्यंत क्रोधआ गया और कहने लगे कि अरे ! इस सृष्टि में ऐसा कौन पापी है जो हमारे इन साधुओं को मारा है। इस तरह कहकर अपने दोनो हाथों को पृथ्वी पर जोर से पटके जिसके परिणाम स्वरुप धरती कांपने लगी और उस पापी का घर गिर गया - तथा पूरा परिवार विनाश को प्राप्त हो गया।

''संत संतापे जात है राज धर्म और वंश ?''

महाराज की आज्ञा से संतो की शरीर पर दवा - औषधभजनानंद स्वामी ने लगाया। संतो की वेदना कम हो गई। संत जान गये और मन में विचार करने लगे कि हम जीव का अच्छा करने के लिये उनकी मार सहन कर लिये लेकिन महाराज तो उनका निकंदन कर डाले। बाद में संत महाराज के पास आकर विन्ती किये, तो महाराजने कहा कि संतो का हृदय सदा कोमल होता है। जाओ वे जीव पशुयोनिमें जन्म लेकर सत्संगियों के घर काम आयेंगे और उनका कल्याण होगा। संत चंदन के समान होते हैं काटने पर भी उसमें से सुगंधआती है। मारने वाले पापी का भी संत कल्याण की चाहना करते हैं। हमारी अहोभाग्य है कि हमें इस तरह का दिव्य सत्संग मिला है।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "मनुष्य के शरीर सीडीरुप है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

अपने में सभी नियम हो, भजन भक्ति करते हों, स्वास्थ्य अच्छा हो, स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिये खाने-पीने पर संयम रखते हों, फिर भी दु:खी क्यों ? इसका कारण यह कि हम वर्तमान में नही जीते है, अतीत में जीते हैं । ऐसा किये होतो अच्छा होता, ऐशा बोले होने अच्छा होता इस तरह वीते काल के विषय में सोचते हैं, ऐसा नहीं तो भविष्य के लिये प्लानिंग करते रहते हैं ऐसा करेंगे, ऐसा करेंगे । भविष्य का विचार भी अधिक नहीं करना चाहिये वह इस लिये कि हम जो सोचते हैं वह होता नहीं है । इससे अधिक आवश्यक है कि हम जो किये हैं उस का परिणाम क्या होगा ? मात्र इतना ही नही रखना कि आज की मजा ले ले, जो सुख मिल रहा है उसका भोग करलें । हम जिसे सुख मानते हैं वह मृगजल की तरह है । मृग को जब प्यास लगती है तो तपती हुई दुपहरी की लप लपाती धूप को वह जल मानकर दौडता है लेकिन उसे वहाँ ऐसा कुछ नहीं मिलता, उसे जलकी तृप्ति नहीं होती । इसी तरह जगत का सुख पानी है । हम मृग के समान हैं । हम दौड़कर संसार के सुख की प्राप्ति कर लेते हैं । फिर भी तृप्ति नही मिलती । क्यों कि वह सच्चा सुख नहीं है । मात्र परमात्मा के चरण में सच्चा सुख है, यथार्थ शांति है । अपने मन में जब परमात्मा के भजन करने का विचार आता है तब उसे टाल देते हैं । यद्यपि काल का कोई भरोसा नही है वह कब आयेगा और आत्मसात कर लेगा । मनुष्य जीवन अंतिम लक्ष्य नहीं है । परमात्माने कृपा करके मनुष्य शरीर दिया है वह सीढीरुप है, उसका उपयोग करना चाहिये । सीढी पर बैठे रहने से प्रगति नहीं होती है, विचार मात्र से भी प्रगति नहीं होगी । उसके लिये प्रयास परमावश्यक है । अंतिम लक्ष्य जब तक नहीं मिले तब तक प्रगति करते रहना है । यह जीवन बहुत कीमती है । अपने जीवन का मूल्य स्वयं निश्चित करना है । अपने जीवन की कीमत हम किस रुप में आंकते हैं वह स्वयं के ऊपर निर्भर है ।

कितना भी बड़ा पत्थर क्यों न हो उसकी कीमत कुछ भी नहीं होगी । लेकिन उस पत्थर को जब शिल्पी कलाकृति प्रदान कर देतै है तब उसकी कीमत हो जाती है । पत्थर के वजन को शिल्पी अपनी गढाई के द्वारा कम कर देता है और वह पत्थर हल्का होकर चमत्कृती को प्रदान करता है । इसी तरह हमारी जो शरीर है वह बडे पत्थर के समान है इसके भीतर जो माया-मोह-ममता-अहंकार रुपी स्थूलता है उसे भजन-भक्ति-सत्संग के द्वारा कम करके भगवत परायण होने से अपने आप स्वयं में चमत्कृति (निखार) आने लगेगी । अपने भीतर बीज है । बीज में से वृक्ष होता है, फूल-फल होता है परंतु उस बीज को कहीं रखे रहिये तो कुछ भी नहीं हो सकता । उसके लिये मिट्टी-पानी-हवा की जरुरत होती है । उस बीज को माटी में डाल देने मात्र से फल-फूल नहीं आते, उसके लिये पूरा ध्यान देने की जरुरत होती है, समय-समय पर क्या उस वृक्ष के लिये आवश्यक है । इसी तरह अपने जीवन का सिंचन करना है । क्रमश:सीढी चढते जाना है । जीवन में कब क्या आवश्यक है उसका ध्यान रखकर समय का उपयोग कर लेना चाहिये । मनुष्य का जीवन उन्नति के लिये है । मात्र पूरे दिन माला फेरते रहने से भी परमात्मा नहीं मिलते ।

एक दृष्टांत है - दुकान में बैठा-बैठा हलुवाई माला फेरता है, उसी समय अचानक कुत्ता आकर मिठाई खाने लगता है । सेठ के एक हाथ में माला है, मुख से राम - राम बोलते है, दूसरे हाथ से कुत्ते को मारते हैं । आप क्या करते हैं ? आप क्या बोल रहे हैं ? इसका ध्यान रखना आवश्यक है । परमात्मा क्रिया देखते हैं । भजन भक्ति से परमात्मा प्रसन्न होते है । आपके अन्तर विवेक से परमात्मा मिलते हैं । इस समय चातुर्मास के नियम चल रहे है, आप सभी के नियम पूरा करने में परमात्मा बल प्रदान करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

●

जो ज्ञानरुपी धन प्राप्त करे वह बुद्धिमान

- सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. कंचनबा (मेडा)

प्रिय भक्तों ! जिन्हे जिसमें गुण लगता है वह उसे करने लगता है, जैसे जहर थोडा भी किसी को सुखदायक नहीं होता । लेकिन विषम स्थिति में वही जहर सुखदायक हो जाता है । जिस अंग में रात-दिन पीड़ा होती हो उसे कटवा देने से शांति मिलती है और उसके कटजाने से आनंद का अनुभव होता है । संसार में नाक-कान कटवाने से कलंक कहा जाता है । लेकिन अलंकार धारण करने के लिये नाक-कान में छिद्र किया जाता है जिसे सुख दायक माना जाता है । इसी तरह जिन्हे भगवान में ही लाभ है ऐसा जो मानता है उसे भगवान के लिये कुछ भी करने में तकलीफ नहीं होती । सबसे बड़ा पाप स्त्री वैश्यावृत्ति के रुप में करती है । इस लोक में तथा परलोक में इस धंधा की कोई प्रशंसा नही करता । लेकिन वेश्या को उसी में धन दिखाई देता है इसलिये उसे वह सुख पूर्वक करती है ।

इसी तरह जो भगवान में आत्म समर्तिप भाव से भजन भक्ति करता है तो निश्चित ही उसमें उसे सुख शान्ति मिलेगी । भगवान और धन्य में बड़ा अन्तर है । शीशा और चिंतामणी की तरह अन्तर है । धन शीशे की तरह है तथा भगवान चिन्तामणी की तरह हैं । धन से कभी मायिक सुख प्राप्त किया जा सकता है

परंतु अखंड - अविनाशी - शाश्वत सुख तो कभी भी प्राप्त नही किया जा सकता। संसार का सभी सुख नाशवंत है, क्षणिक है। पारमार्थिक सुख तो भगवान की शरणागति में है। भजन - भक्ति में है। मायिक सुख का नाश हो जाता है अथवा शरीर का नाश हो जाता है। लेकिन यह सुख अखंड नही रह सकता। गढडा प्र.प्र. के पहले वचनामृतमें श्रीजी महाराज कहते हैं कि भगवान की मूर्ति चिंतामणी के समान है। जिस तरह किसी के हाथ में चितामणी हो वह जो जो पदार्थ की कल्पना कर्ता है उसे वह प्राप्त करलेता है। उसी तरह भगवान की मूर्ति के विषय में यदि जीव की अखंड वृत्ति रहे तो ईश्वर - माया - ब्रह्म के स्वरुप को तत्काल देखने लगता है। इसके साथ ही उसे वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्मलोक इत्यादि जो भगवान के धाम हैं वे सभी दिखाई देने लगते हैं। भगवान के अविनाशी - अखंड - शाश्वत सुख को प्राप्त करते हैं। सां. १ में श्रीजी महाराज ने कहा है कि भगवान के रोम में जितना सुख है उनता सुख अनंत कोटि ब्रह्माडं के विषय में करोडवां भाग भी मिलना संभव नहीं है।

प्रिय भक्तों ! दादा खाचर, मांचा खाचर, इत्यादि अनेक भक्त भगवान की शरणागति में सुख मानते थे। इसी लिये वे लोग अपना सर्वस्व भगवान को अर्पण कर दिये थे। एकवार श्रीजी महाराजने कारियाणी के मांचा खाचर को सरधार में उत्सव करने के लिये समाचार भेंजे। उस समय मांचा खाचर के खेत में कपास पक गयी थी। इसलिये उनके परिवार के वस्ता खाचर खेत का काम पूरा करके उत्सव करने की वात किये। उस समय मांचा खाचर ने विचार किया कि यदि खेती के काम में रुक जायेंगे तो उत्सव में नहीं पहुंच पायेंगे। प्रिय भक्तों। मांचा खाचरने गाँव के भरवाड को बुलाकर कहा कि कल हमारे खेत में पशुओं को छोड़कर सब चरा देना, उसने ऐसा ही किया। भक्तों ! श्रीजी महाराज की आज्ञा का पालन करने के लिये मांचा खाचर ने अपने फसल को पशुओं से चरवा दिया। मांचा खाचर ने वस्ता खाचर से कहा कि मैंने खेत पूरा खाली करवा दिया है अब सरधार जा रहे हैं। मांचा खाचर को धन की अपेक्षा भगवान में धन (सुख) दिखाई देता है। हम लोगों को भी चाहिये कि मांचा खाचर की तरह धन संग्रह न करें। इससे अधिक आवश्यक है कि सत्संग - सेवा - उत्सव - इत्यादि में भाग लेना चाहिये, इसी में सुख है, इसी में शांति है। त्याग में सुख बताया गया है।

बलिराजा त्रिलोकी के सम्राट थे। उन्हें जब ज्ञान हुआ तब वे भगवान के भक्त हो गये। जब तक भगवान के स्वरुप का ज्ञान नही होता तब तक उसे परम पद की प्राप्ति होना संभव नहीं है। जिसे भगवान के स्वरुप में यथार्थ ज्ञान हो गया है वही ज्ञानी है। बाकी अन्य सभी ज्ञान अज्ञान के समान है। वेद, पुराण, शास्त्र इत्यादि का अध्ययन, वर्ण - आश्रम का धर्म पालन, विविधप्रकार के दान, जप, तप, व्रत, तीर्थादन करने का मतलब एक ही है कि भगवान के स्वरुप का ज्ञान प्राप्त हो। संसार से उपरति हो। जिस तरह रण स्थल का बैल सुबह से साम तक चलता ही रहता है, लेकिन जब उसे छोड़ा जाता तब वह वही खड़ा का खड़ा रहजाता है। इसी तरह भगवान के अलांवा अन्य भोग की इच्छा हो तब तक शुभ विचार आ ही नही सकते। आत्मज्ञानी के सिवाय भव सागर पार होना कठिन है। संसार के विषय में आसक्त संसार सागर में ही डूबते-उतारते रहते हैं। आत्मज्ञान तुमडी के समान है भगवानकी शरण जहाज है। भगवान की शरणागत ही मृत्युरुपी सागर से तर जाता है।

प्रिय भक्तों ! भगवान को ही सुख का सागर मानकर उन्ही की शरणागति स्वीकार करने में आत्मकल्याण है। जिन्हे इष्ट देव भगवान स्वामिनारायण की शरणागति की प्राप्ति हो गयी है वे निश्चित रुप से परमपद के अधिकारी हो गये हैं। प्रभु प्रसन्नता सदा बनी रहे ऐसी भगवान के चरणों में प्रार्थना।

अनु. पेईज नं. १० से आगे

तो उसके सभी पाप जल जाते हैं।

छपैया में रहकर त्यागी - गृही व्रताचरण करते हैं तो उन्हें अपरिमित पुण्य मिलता है। (शिबिर के समय प्रबोधिनी एकादशी का व्रत छपैया में आयेगा।

नारायण सरोवर में स्नान करके पवित्र हुआ आत्मा - ब्रह्म की तर पवित्र हो जाता है। मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज तथा राधाकृष्ण आदिक मनोहर मूर्तियों को जो श्रद्धापूर्वक भोग (थाल) भेंट करता है वह सारे ब्रह्मांड को खिलाया, ऐसा हो जाता है। इस छपैयापुर में स्थाई रुप से श्रीहरिकृष्ण घनश्याम प्रभु अपने स्वरुप में ही यहाँ निवास करते हैं। जो जीवात्मा अत्यन्तकातर भाव से दर्शन करने जाता है उसे भगवान का अवश्य दर्शन होता है। इसकी बहुत लोगो को अनुभूति हुई है। प.पू. बड़े महाराजश्री तो अपने आशीर्वचनमें कहते है कि सभी को प्रतिवर्ष छपैया दर्शन करने अवश्य जाना चाहिये।

छपैयाधाम की महिमा जो सुनता है उसके सभी पाप जल जाते हैं। भूमि की रजकण, सूर्य की किरण, वृक्षपत्र, पक्षी, पशु, आकाश के तारे इन सभी की गिनती हो सकती है परंतु इसपुर की महिमा का गुणगान कोई नही कर सकता।

संप्रदाय में बहुत सारी शिबिरें होती है, परंतु श्रीहरि के अपर स्वरुप (बाल स्वरुप घनश्याम की तरह) प.पू. लालजी महाराजश्री के दिव्य सानिध्य में इस शिबिर का दिव्य लाभ अधिक संख्या में युवा लोग ले ऐसी अभ्यर्थना।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रीमद् भक्तचिंतामणी ग्रंथ का पन्चान्ह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से प.भ. भट्ट वसुमतीबहन नलीनचंद्र (लुणावाला) के यजमान पद पर ता. ३०-७-१४ से ३-८-१४ तक स.गु. शतानंद स्वामी द्वारा रचित श्रीमद् सत्संगिजीवन ग्रंथ का पन्चान्ह पारायण स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंत) के वक्तापद पर सुमधुर शैली में संपन्न हुआ था । संहिता पाठ के वक्ता पद पर स्वा. धर्मजीवनदासजी विराजमान थे । कथा के प्रारंभ में प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । यजमान परिवारने उनका पूजन - अर्जन किया था । अंतिम दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे, उस समय यजमान परिवार ने पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । इस प्रसंग पर स.गु. हरिचरण स्वामी, को. जे.के. स्वामी, शा. नारायणमुनि स्वामी, राम स्वामी इत्यादि संत मंडल द्वारा सुंदर आयोजन किया गया था ।

(शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में जन्माष्टमी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरमा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रावण कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव रात्रि में ९-०० बजे से १२-०० बजे तक मंदिर के प्रांगण में प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में गायक कलाकार श्री जयेशभाई सोनी तथा दीपक तलसाणीया एवं साथी कलाकारो के सहयोग से कीर्तन-भजन का सुंदर कार्यक्रम किया गया था, बाद में रास-गर्बा का भी कार्यक्रम किया गया था ।

रात्रि १२-०० बजे प.पू. लालजी महाराजश्रीने जन्मोत्सव की आरती उतारी थी । सभी आयोजन को. जे.के. स्वामी तथा हरिचरण स्वामी (कलोल)की प्रेरणा से संपन्न हुआ था ।

(शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

अमदावाद मंदिर में जलझीलणी एकादशी गणपतिजी का उत्सव परंपरा के अनुसार मनाया गया

सर्वोपरि श्रीहरिने अनेकों प्रकार के उत्सवों को करके प्रत्येक मुमुक्षु का आत्यंतिक कल्याण किया था । इस उत्सव की परंपरा प्रभु के स्थान पर विराजमान आचार्य महाराजश्री द्वारा अविरत चालू है । अपने आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री श्री गणपतिजी के उत्सव में विराजमान होते और स्वयं के रचित गीत गाते । इस गीत (कीर्तन) से प्रभु प्रसन्न होकर उनके ऊपर प्रसन्न होते ।

इस वर्ष प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में संत-हरिभक्त तथा उत्सवी मंडल भजन कीर्तन करते हुये नारायणघाट पहुंचा था । नारायणघाट साबरमती नदी में भगवान को जलक्रीडा कराकर सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर कीर्तन करते हुये वापस आया था ।

(शा. नारायणमुनिदास)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा तथा आशीर्वाद से अलग-अलग गाँवों में सम्पन्न सभायें

मुबारकपुरा

ता. १९-८-१४ को सायंकाल ४-०० बजे से ६-३० बजे तक सत्संग सभा तथा १५१ मिनट की धुन की गयी थी । इस प्रसंग पर नारायणघाट मंदिर से शा.पी.पी. स्वामी, हरिप्रकाश स्वामीने महामंत्र की अलौकिक महिमा समझाई थी । इसके साथ महिला मंडल द्वारा भगवान को पालने में झुलाया गया था । नित्यनूतन झूले पर भगवान को झुलाया जाता था । (अल्पेशभाई मुबारकपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर में अखंड महामंत्र धून

श्री स्वामिनारायण मंदिर जडेश्वर पार्क महादेवनगर में सन्त-हरिभक्तों के सहयोग से ता. २७-७-१४ को श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन प्रातः ५-३० बजे से सायंकाल ५-३० बजे तक की गयी थी । इस धुन में बहुत सारे हरिभक्त जुडे थे । संतो में जिष्णु स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी, बालु स्वामी, भक्ति स्वामी, नीलकंठ स्वामी इत्यादि संतोने भगवान की महिमा का वर्णन किया था । अन्त में ठाकुरजीकी आरती के बाद सभी प्रसाद ग्रहण किये थे।

(पुजारीश्री महादेवभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा

ता. २७-७-१४ रविवार को मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, बालू स्वामी, इत्यादि संतोने परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की महिमा का प्रतिपादन किया ता । युवक मंडल ने कीर्तन - भजन की थी । ५०० जितने भक्त इस कार्यक्रम में भाग लेकर श्री नरनारायणदेव के महोत्सव की जानकारी प्राप्त की थी ।

(पुजारीश्री मोटेरा)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में १,२५,००० वृक्षारोपण का कार्य सम्पन्न

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा को. जे.के. स्वामी तथा शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी की प्रेरणा से १००० । तुलसी के वृक्ष तथा १००० अशोकवृक्ष का वितरण जन्माष्टमी के शुभ दिन किया गया था ।

नारायणघाट में वृक्षारोपण का कार्यक्रम

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में सवा लाख वृक्षारोपण का आयोजन किया गया । जिस में महंत शा. पी.पी. स्वामी द्वारा सुंदर वृक्षारोपण के अनुसंधान में प्रत्येक भक्त को तुलसी तथा एक आसोपालव इस प्रकार कुल ३०० पौधों का

वितरण किया गया । प.पू. महाराजश्री के ऐसे पर्यावरण के सुंदर आदर्शरुप संकल्प का सभी ने सत्कार्य किया ।

(डॉक्टर गोविंदभाई)

एप्रोच श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा वृक्षारोपण का कार्यक्रम

प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकलु पर्यावरण के प्रेमी है । उनके अलौकिक जीवन में से प्रेरणा लेकर श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में अहमदाबाद सीटी में वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया । जिस में एप्रोच-बापुनगर युवक मंडल द्वारा प्रत्येक सीटी एरिया में हमारे मंदिरो में वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया ।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल हिरावाडी द्वरा पौधो का वितरण किया गया

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल हीरावाडी द्वारा ता. १६-८-१४ को निम्न गाँवो में वृक्षारोपण - वितरण कार्यक्रम किया गया ।

ईश्वरपुरा, बालवा, आमजा, प्रतापपुरा, लिंबोडा, कल्याणपुरा, भीमापुरा, गुलाबपुरा तथा ईटादरा गाँव में हरिभक्तों तथा युवक मंडल ने वृक्षारोपण हेतु पौधों का वितरण किया । हिरावाडी युवक मंडल के संजयभाई प्रविणभाई, कौशिकभाई तथा विजापुर के पोपटभाई, चन्द्रकांतभाई रसिकभाई आदिने इस सेवा में भाग लिया । (महेन्द्रभाई ए. पटेल, हिरावाडी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच पंचान्ह पारायण तथा समूह महापूजा का आयोजन

स.गु. महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदाजी की प्रेरणा से एप्रोच मंदिर के दशाब्दी महोत्सव के उपक्रम में ता. १८-८-१४ से २२-८-१४ तक मंदिर के कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन का रात्रि में पारायण श्री रमेशभाई आर. मांदलिया तथा श्री अरविंदभाई गज्जर के यजमानपद पर सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर कालुपुर तथा कांकरिया मंदिर के संतोने पधारकर अमृतवाणी का लाभ दिया ।

समूह महापूजा में १८५ भक्तोंने लाभ लिया था । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को दर्शन दिया । श्री घनश्याम महाराजकी राजभोग आरती करके महापूजा में बिराजमान हुए । उसके बाद सभा में सभी को आशीर्वाद दिये ।

झूलोत्सव तथा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम में २०० पौंधो का वितरण किया गया । (गोरधनभाई सीतापरा)

विजापुर में सत्संग सभा

यहाँ के विहार गेरीता के सभी भक्तों की विजापुर में सुंदर सभा में स्वा. कुंजविहारी स्वामीने श्री नरनारायणदेव महोत्सव की संपूर्ण जानकारी प्रदान की । श्री भरतभाई पटेल सभा के यजमान थे । उसी प्रकार शा. कुंजविहारी स्वामीने बड़ा पालडी व्यास में भी सभा करके हरिभक्तों को प्रसन्न करके उत्सव की जानकारी प्रदान की ।

बायड़ तथा आकरुंद गाँव में सत्संग सभा

यहाँ के गाँवो में शा. कुंजविहारी स्वामीने श्री नरनारायणदेव की महिमा तथा महापूजा करके प्रत्येक हरिभक्तों की प्रसन्न किया । श्री हार्दिकभाईने महापूजा के यजमान पद का लाभ लिया । (शा. कुंजविहारीदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर खारोल

श्री स्वामिनारायण मंदिर खारोल में पुजारी स्वामी हरिस्वरुपदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा प्रत्येक एकादशी को इस विस्तार की सत्संग सभा में श्री नरनारायणदेव का धर्मकुलका माहात्म्य समझाया गया था । इसके साथ श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सदस्य बनाये गये थे। (पुराणी स्वामी हरिस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा महिला मंडल द्वारा ता. १-३-१४ से ता. ७-७-१४ तक ७२१ घंटे की महामंत्र धून की गयी

समग्र धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री घनश्याम महिला मंडल नारणपुरा की बहनों द्वारा ता. १-३-१४ से ता. १-७-१४ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १२१ घंटे के धून की गयी । सुबह ६ से साम के ६ तक प्रत्येक बहने धुन में भाग लेती थी । धुन में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने पधारक बहनों को आशीर्वाद दिये । धुन की पूर्णाहुति के प्रसंग पर नारणपुरा मंदिर से प्रातः ४ बजे अहमदाबाद मंदिर से पदयात्रा का आयोजन किया गया । जिस में २०० से भी अधिक बहनोने भाग लिया था । श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती के दर्शन करके हवेली में सांख्ययोगी बहनों की उपस्थिति में ३ घंटे की धून की गयी । अंत में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने समस्त बहनो को आशीर्वाद दिया । अहमदावाद मंदिर तथा नारणपुरा मंदिर में बहनो की तरफ से रसोई दी गयी । जिस में ५०० बहनोने महाप्रसाद ग्रहण किया ।

(नारणपुरा श्री घनश्याम महिला मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया श्रीकृष्ण जन्मोत्सव - अमरनाथ दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा शा. आनंद स्वामी की प्रेरणा से भव्य कृष्ण पक्ष-८ को कृष्ण जन्मोत्सव, सिध्धेश्वर महादेव में बरफ के अमरनाथ दर्शन आदि कार्यक्रम किये गये । रात्रि १२-०० बजे तक श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

सिध्धेश्वर महादेव समक्ष महारुद्र यज्ञ किया गया । जिस का कई भावुंकों ने लाभ लिया । पूर्णाहुति प्रसंग पर साम को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे. श्रीफल द्वारा यज्ञ की गयी पूर्णाहुति । तथा सिध्धेश्वर महादेव के अभिषेक के बाद आरती की गयी ।

सावन महीने में कथा का आयोजन : प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से समग्र सावन महीने में साम को स.गु. शा. हरिकृष्णदासजीने (बापुनगर मंदिर में सुंदर कथा की । कथा की पूर्णाहुति कृष्णपक्ष अमावस्या को सगु. वयोवृद्ध माधव स्वामी तथा एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजीने की । काकंरिया विस्तार के भक्तोंने समग्र सावन में कथा का लाभ लिया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में २१ वाँ ज्ञानसत्र मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा वयोवृद्ध संत हरिप्रकाशदासजी स्वामी की प्रेरणा से स.गु. शा. माधव स्वामी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में महंत शा. हरिॐप्रकाशदासजी के वक्तापद पर श्रीमद सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण ता. १५-८-१४ से ता. १९-८-१४ तक प.भ. भगवानदास नागरदास पटेल के मुख्य यजमान पद पर तथा प.भ. नटुभाई मगनभाई पटेल के यजमान पद पर सम्पन्न हुआ कथा के प्रारंभ में दोनो यजमानों के घर से पोथीयात्रा धूमधाम से नारणपुरा मंदिर आयी थी।

मंदिर में दोनों यजमानश्रीनोंने व्यासपीठ का पूजन आरती का सुंदर लाभ लिया । इस प्रसंग पर स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी तथा शा. कृष्णजीवन स्वामीने अमृत वाणी का लाभ दिया। कथा में आनेवाले उत्सवों को धूमधाम से मनाया गया । श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भी मनायी गयी । पूर्णाहुति प्रसंग पर स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी तथा शा. माधव प्रसाद स्वामीने यजमान की सेवा का सम्मान किया । नाराणपुरा के हरिभक्तों ने पांच दिन तक अलौकिक कथा के श्रवण का पान किया। अंत में सभीने प्रसाद ग्रहण किया। सभा संचालन स्वा. प्रेमस्वरुपदासने किया। (घनश्यामभाई पटेल, उवारसद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (पाटीदार) डांगरवा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर (पाटीदार) डांगरवा में श्रीहरि दहीं-दूधलीला उत्सव (द्विशताब्दी महोत्सव भक्तराजश्री जतनबाई का) ता. २३-७-१४ से २७-७-१४ तक धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण शा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) के वक्तापद पर पूर्ण हुई। डांगरवा गाँव तथा आसपास के गाँव के भक्तोंने कथा श्रवण किया । सभा संचालन सिद्धपुर के महंत शा. चंद्रप्रकाशदासजीने किया । त्रिदिनात्मक श्रीहरियाग में कई भक्तोंने भाग लिया।

उत्सव प्रसंग में ता. २४-७-१४ को भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे तब उनका स्वागत शोभायात्रा निकाल कर किया गया। ता. २५-७-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। उनके वरद् हाथों से श्रीहरियाग की पूर्णाहुति की गयी। ता. २६-७-१४ को बहनों को दर्शन-आशीर्वाद प्रदान करने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारी थी। अंत में पूर्णाहुति प्रसंग पर ता. २७-७-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। दोनो मंदिरो में ठाकुरजी की आरती करके कथा की पूर्णाहुति के बाद दही-दूधलीला उत्सव मनाया गया। श्रीहरि तथा जतनबाई के २०० वर्ष के दहीं-दूधलीला प्रसंग का तादृश दर्शन डागंरवा गाँव के हरिभक्तोने किया। इस प्रसंग पर जेतलपुर के पू. पी.पी. स्वामी प्रेरणा स्वरुप थे।

झुलोत्सव दर्शन समस्त महिने में भिन्न-भिन्न झुलोत्सव बनाकर श्रीहरि को झुलाया गया। (कोठारीश्री बलदेवभाई वि. पटेल तथा समस्त डांगरवा के हरिभक्तगण)

गोकुलपुरा (इडर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से हिंमतनगर मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज के २५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष में सुंदर सत्संग सभा की गयी। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा कीर्तन भक्ति के बाद हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदाजीने देव की महिमा का गान करके हरिभक्तों को प्रसन्न कर दिया था।

(जसुभाई एच. पटेल, ना. मामलतदार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटा विभाग)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर (वांटो) (बहनों का) में समग्र सावन महीने में भिन्न प्रकार के झूले पर जैसे कि, पंच मेवा, फल, फूल, चोकलेट के भिन्न प्रकार के झूला बनाकर श्रीहरिकृष्ण महाराज को झूलाकर दर्शन करवाये थे। बड़ी संख्या में बहनोने भाग लिया था। रोज सत्संग तथा कीर्तन-भक्ति तथा झुलोत्सव की आरती की जाती थी। (सत्संग महिला मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से महंत शा. घनश्याम स्वामी की प्रेरणा से सावन महीने में ठाकुरजी के समक्ष कलात्मक विभिन्न झूले बनाकर ठाकुरजी को झुलाया गया। चंद्रप्रकाश स्वामी की प्रेरणा से यासिनभाई पंकजभाई आदि भक्तोने झूलोत्सव मनाया था। सावन महीने में दशम स्कंधकी कथा घनस्याम स्वामी तथा सी.पी. स्वामीने की थी।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४२ वे प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में माणसा मंदिर में समूह महापूजा का आयोजन किया गया। भक्तोंने महापूजा में बैठकर लाभ लिया था। समग्र महापूजा विधिसी.पी. स्वामी तथा माधव स्वामीने किया।

(कोठारी चंद्रप्रकाशदास)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा मूली के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से सावन कृष्णपक्ष-८ श्रीकृष्ण जनामाष्टमी का उत्सव पपू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में मनाया गया।

सर्व प्रथम साम को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। मूली मंदिर के महंत स्वामी तथा बुजुर्ग संतो के साथ सुंदर स्वागत करके उत्सव मनाया गया। उसके बाद श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के दर्शन करके मंदिर के चौक में आगामी श्री

नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम के भागस्वरुप वृक्षारोपण का कार्य करके ''श्री राधाकृष्णदेव यात्रिक भुवन'' का कार्यक्रम देखकर प्रसन्न होकर सभा में विराजमान हुए थे। सभा में महंत स्वामी, संतोनें तथा अग्रगण्य हरिभक्तोने पुष्पहार पहनाकर पूजन किया । सावन महीने की कथा शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से कथा के हरिभक्तों की संपूर्ण सेवा से अहमदाबाद मंदिर से प्रकाशित महाग्रंथ वचनामृत तथा भक्तचिंतामणी ग्रंथ प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से पाठ करने हेतु प्रत्येक हरिमंदिरों में भेट दिया गया। मूली देश के हजारो भावुकोने देवदर्शन, धर्मकुलदर्शन करके जीवन को धन्य बनाया था । सभा संचालन श्री शैलेन्द्रसिंह झालाने किया था । अन्य सेवा में व्रज स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी । जे.के. स्वामी, भरत भगत तथा प्रविण भगतने भाग लिया।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स.गु. स्वा. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से मंदिर में सावन महीने में कलात्मक झूला बनाकर श्रीहरि को झुलाकर हरिभक्तों को दर्शन करवाया । इस प्रसंग पर दैनिक पेपर तथा ईलेकट्रोनिक मीडियाने सुंदर कवरेज द्वारा सभी को घर बैठे दर्शन करवाये । समग्र सेवा शा. स्वा. प्रेमवल्लभदासजी की देखरेख में पंकजभाई परीख तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने की।

कथा-पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से सावन महीने में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकी पारायण कथा शा. स्वा. प्रेमवल्लभदासजी की के वक्तापद पर सावन कृष्ण पक्ष-९ से सावन कृष्णपक्ष अमावस्या तक हुई । सभी भावुक भक्तोंने कथा का लाभ लिया था । समग्र आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी द्वारा किया गया।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री नरनारायणदेव महोत्स के उपलक्ष्य में मूली के गाँवों में अखंड धून की गयी

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में मूली के ३० गाँवो में सावन महीने में १२ घंटे की अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का आयोजन किया गया। सावन कृष्णपक्ष अमावस्या को सुरेन्द्रनगर मंदिर में धून की पूर्णाहुति की गयी । आसपास के गाँवो के हरिभक्तगण उपस्थित थे । अहमदाबाद से महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी ने फोन द्वारा सभी को आशीर्वाद दिया । जिस में मेथाण गाँव के हरिभक्तों के साथ मार्गदर्शक निलकंठ स्वामी गुरु जीष्णु स्वामी थे।

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो इटास्का १६ वाँ पाटोत्सव मनाया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से शिगाको-ईटास्का श्री स्वामिनारायण मंदिर का १६ वाँ पाटोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ''श्री शिक्षापत्री भाष्य'' नवान्ह पारायण स.गु. शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई। महोत्सव के आरंभ में श्री स्वामिनारायण महामंत्र १६ घंटे की अखंड धून की गयी । उसके बाद पारायण, श्रीहरियाग, समूह आदिनारायण महापूजा, मंदिर में बिराजमान देवों का महाभिषेक तथा अन्नकूट दर्शन का सुंदर आयोजन किया गया।

शिकागो - ईटास्का श्री स्वामिनारायण मंदिर का १६ वाँ पाटोत्सव मनाया गया । जिस में देशविदेश से पधारे हुए सोलह संतो के साथ प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य दर्शन सभाखंड में हुए । हरिभक्तों की भीड़ काफी जुटी थी । प.पू. बड़े महाराजश्री ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये। पू.संतो की अमृतवाणी का लाभ भी मिला।

पाटोत्सव के मुख्य यजमान पद पर प.भ. विष्णुभाई, श्रीमती मंजुलाबहन पटेल (सोजावाले परिवार, सह यजमान प.भ. ठाकोरभाई तथा श्रीमती जयश्रीबहन पटेल परिवार (उवारसद), पारायण के यजमान पद पर प.भ. कनुभाई तथा श्रीमती ज्ञानीबहन का परिवार (सलाल), प.भ. ईश्वरभाई तथा श्रीमती मधुबहन पटेल परिवार (वडु) आदिने सेवा का लाभ लिया । प.भ. घनश्यामभाई (देवुसणा), प.भ. ज्योतीन्द्रभाई (बारेजा), प.भ. गोविंदभाई (वडु), प.भ. पंकजभाई तथा प.भ. महेन्द्रभाई (वडु) अन्य प्रसंगो के यजमान थे।

प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्रीने बहनो को सभा में सत्संग तथा भक्ति के विषय में सुन्दर सुबोधप्रदान किया था । मंदिर में बिराजमान देवों का महाभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ था। प.पू. बड़े महाराजश्री का आशीर्वचन यहाँ के लोगों को सदा मिलता रहता है।

यहाँ के मंदिर के महंत पू. जे.पी. स्वामी तथा शास्त्री विश्वविहारीदासजी के सहयोग से तथा छोटी-बड़ी सेवा करने वालों के सत्संग समुदाय से महोत्सव सुंदर ढंग से संपन्न हुआ था।

(वसंत त्रिवेदी शिकागो)

लुईवील (कंटकी) मूलीधाम मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अमेरिका के लुइवील (कंटकी) मूली धाममें आई.एस.एस.ओ. के महामंदिरो की प्राण प्रतिष्ठा वेद विधिसे संपन्न हुई।

इस मूर्ति प्रतिष्ठा में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण श्री योगेन्द्र भट्टजीने की थी । कथा में आने वाले सभी प्रसंग श्री कृष्णजन्मोत्सव, रुक्मिणी विवाह को धूमधाम से मनाया गया था। इस अवसर पर अनेक भक्त यजमान बनने का लाभ लिये थे । ब्राह्मण तथा भक्तजन एक साथ पूजा का लाभ लिये थे। इस प्रसंग में भव्यातिभव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी। जिस में प.पू.ध.धु.

आचार्य महाराजश्री तथा साथ में आये हुये पार्षद वनराज भगत, कनु भगत, पू. पी.पी. स्वामीजी, ब्र. राजेश्वरानंदजी, शा. धर्मवल्लभदासजी, व्रज स्वामी, हरिनन्दन स्वामी, जे.पी. स्वामी, विश्वविहारी स्वामी, जयप्रकाशदास, योगी स्वामी, सर्वेश्वर स्वामी, माधव स्वामी, धर्मकिशोर स्वामी, शा. पूर्णप्रकाशदासजी, शा. श्रीजी स्वामी, स्वयंप्रकाशदास, शा. राम स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, तथा हरिकृष्ण स्वामी, तथा हजारो हरिभक्त शोभायात्रा में कीर्तन-भजन-रास करते हुये चल रहे थे । सुन्दर जिसकी आभाप्रगट हो रही थी ऐसे प.पू. आचार्य महाराजश्री सभी को दर्शन दे रहे थे । इसो से अपने प्रत्येक मंदिर से प्रेसिडेन्ट तता अग्रगण्य हरिभक्त उपस्थित थे । शोभायात्रा के बाद मुख्य मंदिर के मुख्य द्वार के उद्घाटन में प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ यजमान परिवारने अलौकिक लाभ लिया था । शनिवार की रात्रि में सत्संग के तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिस में बालकों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया था । ता. १७-८-१४ रविवार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के प्रातःकाल मंदिर में विराजमान देवों की प्राणप्रतिष्ठा, जलकेशर अभिषेक षोडशोपचार के साथ पूजन प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुआ था । इसके बाद श्रृंगार आरती की गई थी । इस प्रसंग में हजारो अमेरिका के हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे । प्रासंगिक सभा में यजमान भक्तों का, प्रत्येक प्रेसिडेन्ट का, सदस्यों का, सभी प्रकार की सेवा करने वाले भक्तों का संमान किया गया था । लुइवील कंटकी स्टेट के मेयर तथा उनके साथ आये हुए कुलकर्णी का सन्मान किया गया था । यह सन्मान प.पू. महाराजश्री के हाथों हुआ था । महानुभाव संतोने मूलीधाम मंदिर का महत्व समझाया था । अन्त में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अपने आशीर्वचन में बताया कि आज भगवान प्रत्यक्ष विराजमान हुये हैं, इस लिये उनके वचनो को याद करके अपने हृदय में उतारकर दर्शन करेंगे तो आप सभी की सभी मनोकामना पूर्ण होगी । अन्तःकरण शुद्धि का मंदिर परधाम है, अतः आप सभी मंदिर प्रतिदिन आते रहियेगा । इस तरह का आशीर्वाद देकर खूब प्रसन्न हुये थे ।

(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया न्युजर्सी में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के नरनारायण स्वामी की प्रेरणा से श्रावण शुक्ल-१५ श्रावणी रक्षाबन्धन के पर्व पर सायंकाल ५ बजे से ८ बजे तक महामंत्र धुन, कीर्तन, भजन, तथा ठाकुरजी की आरती की गयी थी । पूरे दिन दर्शनार्थियों की भीड़ लगी थी । स्वामी ने कथा में रक्षाबंधन का महत्व समझाया था । सभी बहने घनश्याम महाराज को रक्षा सूत्र अर्पण की थीं । अन्त में सभी भगवान का महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे ।

(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरन्टो केनेडा का ठठ्ठा पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर का छठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था ।

ता. १५-८-१४ को पारायण के उपलक्ष्य में पोथीयात्रा मंदिर से कथा स्थल पर गाजे बाजे के साथ पहुंची थी । ता. १५-८-१४ से १७-८-१४ तक त्रिदिनात्मक श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन पारायण शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजीने किया था । इस प्रसंग पर दश वर्ष के लंबे समय के बाद प.पू. बड़े महाराजश्री अपने भक्तों को आशीर्वाद देने के लिये पधारे थे ।

बहनो के अति आग्रह पर प.पू. बड़ी गादीवालाजी १० दिन तक महिला वर्ग को सत्संग सभा करके आशीर्वाद प्रदान की थी ।

इस प्रसंग पर महापूजा का भी आयोजन किया गया था । जिस में बहुत सारे हरिभक्त महापूजा का लाभ लिये थे । ता. १७-८-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों केनेडा मंदिर में बिराजमान श्री हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार विधिसे महाभिषेक किया गया था । इसके बाद अन्नकूट की आरती की गयी थी । महापूजा तथा पारायण की पूर्णाहुति की आरती प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों सम्पन्न हुई थी । इस प्रसंग में अमदावाद कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी शा. हरिकृष्णदासजी स.गु. ब्र. राजेश्वरानंदजी, स.गु. ब्र. पवित्रानंदजी (बोस्टन), शा. स्वामी सिद्धेश्वरदासजी (चेरीहील), श्रीजी स्वामी (विहोकन) तथा पार्षद वनराज भगत तथा कनु भगत उपस्थित थे । बहुत सारे भक्तों ने सेवा का लाभ लिया था । प.भ. दशरथभाई चौधरी (प्रेसीडेन्ट)ने आभार विधिकी थी । प्रेसी. नटुभाई ने भी प्रेरणादायी प्रवचन किया था ।

रात्रि में १२-०० बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव की आरती प.पू. बड़े महाराजश्रीने की थी । संत - हरिभक्त रास खेले थे । प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुये कहा कि हमने पहली बार केनेडा में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव मनाया है इसका हमें खूब आनंद है । इस उत्सव में युवक तथा युवतीयों की सेवा प्रेरणारुप थी । पुजारी आशिष भगतने भगवान की सुन्दर सेवा की थी ।

प.पू. बड़े महाराजश्री अत्यन्त प्रसन्न होकर सभी हरिभक्तों का ग्रंथ में फोटो लिये थे । सभा संचालन सेक्रेटरी श्री रसिकभाई पटेलने किया था । पाटोत्सव का दर्शन हजारों हरिभक्तोने किया था, दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया था ।

पियोरिया (आई.एस.एस.ओ.) चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से पियोरिया चेप्टर में प्रति रविवार को सत्संग सभा का आयोजन होता है । १० अगस्त को रक्षाबंधन के प्रसंग पर धुन भजन करके भगवान को रक्षासूत्र के झूले पर झुलाया गया था । बालक कन्यायों से रक्षा सूत्र बंधाकर आनंद का अनुभव किये थे ।

१७ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टी के दिन भगवान को पालने में झुलाकर धुन-भजन करके रात्रि में श्री कृष्णजन्मोत्सव मनाया गया था । बालकों ने सुन्दर कीर्तन गाया था ।

(रमेश टी. पटेल)

Google मे "जेतलपुर की एप्लीकेशन"

प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४२ वे प्राकट्योत्सव तथा गादी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर मंदिर द्वारा मोबाइल फोन में ही श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शन, प्रसादी के स्थान, कथा, कीर्तन जैसी अन्य जानकारी प्राप्त करने हेतु ''एन्ड्रोईड़ मोबाईल'' में Google में टाईप करने पर ''जेतलपुरधाम'' "Jetalpurdham" के रोज दर्शनका लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

ता. २५-८-१४ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से एप्लीकेशन का लोम्चींग किया गया।

(महंत स्वामी, जेतलपुर)

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग (श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद) आगामी धार्मिक परीक्षा हेतु

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा ली जानेवाली धार्मिक परीक्षा ता. ११-१-२०१४ रविवार को निर्धारित स्थानिक केन्द्रो पर परीक्षा ली जायेगी । जिससे प्रत्येक केन्द्र संचालको को अपने गाँव शहर की परीक्षा की सूची ता. ३०-११-१४ तक में निम्न पते पर पहुंचानी है।

मुख्य संचालकश्री,
श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग,
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१

अमदावाद श्री नरनारायणदेव देश के हरिमंदिरो के कोठारीश्री वचनामृत - भक्तचिंतामणी ग्रंथ को प्राप्त कर लेना

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में कच्छ के साहित्यप्रेमी हरिभक्तों की तरफ से वचनामृत ग्रंथ तथा भक्तचिंतामणी ग्रंथ दोनो अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के प्रत्येक मंदिरो में भेट स्वरुप प्रदान करती है . जो आपके विस्तार के श्रीनरनारायणदेव युवक मंडल के पास से प्राप्त करना है।

(कोठारी स्वामी, अहमदाबाद, कालुपुर मंदिर)

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

अहमदाबाद-कालुपुर : श्री स्वामिनारायण मंदिर के संत स्वामी ज्ञानप्रकाशदासजी (राम स्वामी) गुरु स.गु. स्वा. घनश्यामसेवकदासजी (श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज के पूर्व पूजारी) श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ता. १७-८-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

गोधावी : प.भ. महेन्द्रसिंह जामभा वाघेला के सुपुत्र श्री विरेन्द्रसिंह (उं. वर्ष ४०) ता. १३-८-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

बुबाणा (ता. दशाव्र) : प.भ. प्रभुभाई करशनभाई सिंधव (अपने प्रति प.भ. डाह्याभाई चोलाभाई बूटीया कालीयाणा के जमाईश्री) ता. १२-७-१४ गुरुपूर्णिमा को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अहमदाबाद-मेमनगर : प.भ. चन्द्रकांतभाई प्रभुदास पटेल (कुबड़थलवाला) नारणपुरा मंदिर के ट्रस्टीश्री) ता. १३-७-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अंबापुर : प.भ. कांतिभाई सोमाभाई पटेल ता. २६-७-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

कोठंबा : (श्री तेजेन्द्रप्रसादजी स्वामिनारायण आर्टस कोलेज कोठंबा के पूर्व प्रमुख) प.भ. घनश्यामभाई सखीदास पटेल ता. ८-८-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

बरोल-भाल : श्री राधाकृष्णदेव मूली के निष्ठावान प.भ. भगवानभाई कानाभाई खेर ता. २१-८-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

बरोल-भाल : प.भ. शांतिभाई लखमणभाई चावडा की धर्मपत्नी वालीबहन शांतिभाई चावडा का ता. २२-८-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(1) Dahi-Dudh Leela Utsav and Katha-Parayan organized in the pious presence of Other Forms of Shree Hari H.H. Shri Acharya Maharaj, H.H. Shri Mota Maharaj and HH. Shri Lalji Maharaj in Dangarva (Patidar) temple. (2) H.H. Shri Lalji Maharaj performing Vriksha-ropan (tree-plantation) as a part of Shree Narnarayandev Mahamahotsav and distributing 'Vachanamrit' to the Haribhaktas in the Sabha in Muli temple on the occasion of Janmastmi Samaiya. (3) Grand Hindola Darshan of series of lights in Mubarakpura temple. (4) Saints and haribhaktas performing Satsang Sabha in Khokhra temple, Group Mahapooja by Bal Mandal in Laloda temple and Akhand Dhoon in the village of Muli Desh and social activities of tree-plantation in Ahmedabad city are and in the villages of North Gujarat as a part of Shree Narnarayandev Mahotsav.

Registered under RNI NO.-GUJENG/2007/20198 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.582/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

(1) Hon'ble Prime Minister of New Zealand, Dr. Kantibhai Patel and Haribhaktas performing aarti of Janmastmi Utsav in our Auckland temple.

(2) H.H. Shri Acharya Maharaj performing the ritual of Abhishek of Shri Ghanshyam Maharaj on the occasion of 8th Patotsav of Boston temple.

(3) H.H. Shri Lalji Maharaj performing aarti of Shree Ganpatiji and initiating the procession alongwith Mahant Swami and other saints in Kalupur temple on the occasion of Jaljilani Ekadashi.

નોંધ:: કોઈ વિસ્તારમાં ફોર્મ ન પહોંચી શક્યા હોય તો નીચે આપેલ નંબર પર કોન્ટેક્ટ કરવો No.9601263262,9601290833,9925365609

Jagadish Offset
Praful Kharsani